INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

वरिष्ठ अध्यापक

RAJASTHAN - 2ND GRADE

PAPER – 1

BHAG – 1

राजस्थान भूगोल, इतिहास, संस्कृति, एवं राजव्यवस्था

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स ***"राजस्थान 2nd Grade (वरिष्ठ अध्यापक) (संस्कृत शिक्षा विभाग)"*** *को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को* ***राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)*** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा* ***"राजस्थान 2nd Grade (वरिष्ठ अध्यापक) (संस्कृत शिक्षा विभाग)"*** *भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/tiy32p

Online Order करें - https://shorturl.at/coEI9

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

राजस्थान का भूगोल		
क्र.सं.	अध्याय	पेज
1.	स्थिति एवं विस्तार (सामान्य परिचय)	1
2.	जलवायु	23
3.	जल निकासी (अपवाह तंत्र) नदिया एवं झीले	30
4.	राजस्थान की वनस्पति	47
5.	कृषि	56
6.	पशुधन	66
7.	राजस्थान में डेयरी विकास	73
8.	जनसँख्या वितरण, विकास, साक्षरता और लिंगानुपात	76
9.	जनजातियाँ	81
10.	राजस्थान के प्रमुख उद्योग	85
11.	प्रमुख पर्यटन केंद्र	87
	राजस्थान का इतिहास	
1.	राजस्थान की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता	93
2.	8 वीं से 18 वीं शताब्दी तक राजस्थान का इतिहास	100
3.	अजमेर के चौहान	105
4.	दिल्ली सल्तनत के साथ सम्बन्ध (मेवाड़, रणथम्भौर और जालौर)	106
5.	राजस्थान में मुग़ल शासन	149
6.	राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास	153
7.	राजस्थान में राजनैतिक जागरण	157
8.	प्रजामंडल आन्दोलन	162
9.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आन्दोलन	164
10.	राजस्थान का एकीकरण	173
	राजस्थान की कला एवं संस्कृति	
1.	लोक देवता एवं लोक देवियाँ	177

2.	राजस्थान के संत	187
3.	वास्तुकला-मंदिर, किले और महल	195
4.	पेंटिंग्स (चित्रकला)	217
5.	मेले और त्योंहार	227
6.	वस्त्र एवं आभूषण	247
7.	लोक संगीत और लोक नृत्य	251
8.	भाषा और साहित्य	268
	राजस्थान की राजव्यवस्था	
1.	राज्यपाल	279
2.	मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद	284
3.	राज्य सचिवालय और प्रमुख सचिव	292
4.	राजस्थान लोक सेवा आयोग, संगठन और भूमिका	298
5.	राज्य मानवाधिकार आयोग, संगठन और भूमिका	299
6.	राजस्थान में पंचायती राज	301
	उच्च न्यायालय (एक्स्ट्रा टॉपिक)	308

राजस्थान का भूगोल

अध्याय – 1

स्थिति एवं विस्तार

सामान्य परिचय

राजस्थान का विस्तार- इसका अध्ययन करने से पहले इससे जुड़े हुए कुछ अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझिए:

1. भूमध्य रेखा
2. कर्क रेखा
3. मकर रेखा
4. अक्षांश
5. देशांतर

इन मानचित्र को ध्यान से समझिए : –

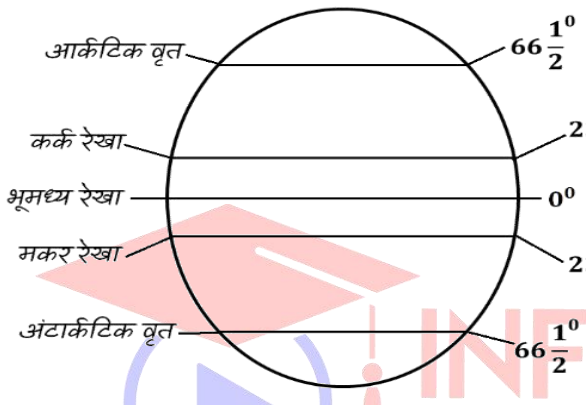

(मानचित्र न. – 1)

नोट- भूमध्य रेखा:- "विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा" पृथ्वी की सतह पर उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव से समान दूरी पर स्थित एक काल्पनिक रेखा है। यह पृथ्वी को दो गोलार्द्धों, उत्तरी व दक्षिणी में विभाजित करती है।

इस रेखा पर प्रायः वर्ष भर दिन और रात की अवधि बराबर होती, यही कारण है कि इसे विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा कहा जाता है।

विषुवत रेखा के उत्तर की ओर कर्क रेखा है व दक्षिण की ओर मकर रेखा है।

नोट:- पृथ्वी / ग्लोब को दो काल्पनिक रेखाओं द्वारा "उत्तर -दक्षिण" तथा "पूर्व- पश्चिम" में विभाजित किया गया है। इन्हें अक्षांश व देशांतर रेखाओं के नाम से जानते हैं।

अक्षांश रेखाएँ:- वह रेखाएँ जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर बनी हुई है, अथार्त भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते है। भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा माना गया है। (देखें मानचित्र-1)

ग्लोब पर कुछ अक्षांशों की संख्या (90 डिग्री उत्तरी गोलार्द्ध में और 90 डिग्री दक्षिणी गोलार्द्ध में) कुल 180 डिग्री है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181 होती है।

देशांतर रेखाएँ:- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360 डिग्री रेखाओं को देशांतर रेखाएँ कहा जाता है। ग्रीनविच, जहाँ ब्रिटिश राजकीय वेधशाला स्थित है, से गुजरने वाली यामोत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरू की जाए। इस यामोत्तर को प्रमुख यामोत्तर कहते है। इसका मान देशांतर है तथा यहां से हम 180 डिग्री पूर्व या 180° डिग्री पश्चिम तक गणना करते है।

नोट:- उपयुक्त विषय को अधिक विस्तार से समझने के लिए हमारी अन्य पुस्तक"भारत एवं विश्व का भूगोल पढ़े"।

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°3" से 30° 12" उत्तरी अक्षांश ही तक है जबकि राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 69°30" से 78°17" पूर्वी देशांतर है। (देखें मानचित्र A, B)

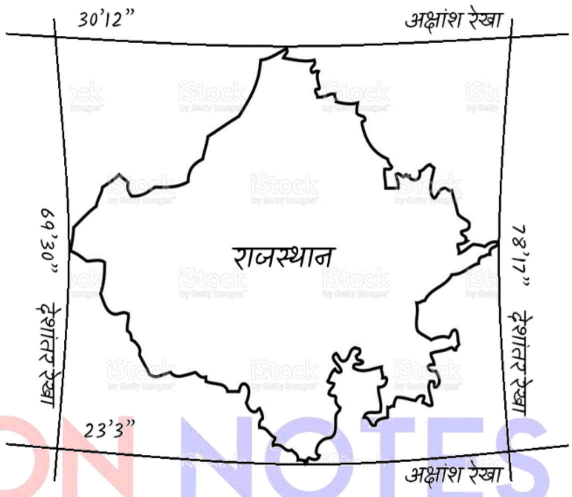

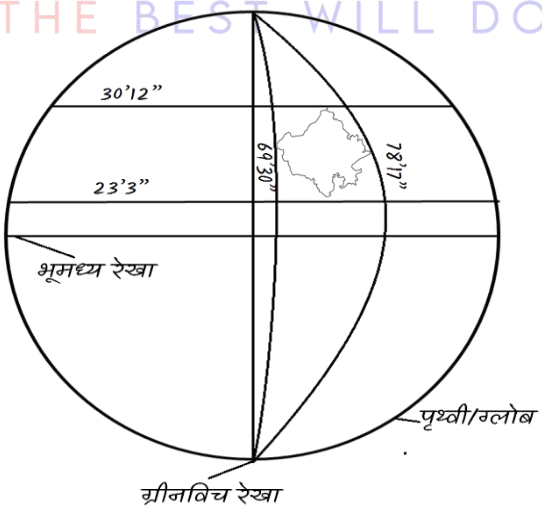

(मानचित्र-A)

नोट:- राजस्थान का कुल अक्षांशीय विस्तार **7°9" (30°12" 23°3")** है तथा कुल देशांतरीय विस्तार **8°47" (78°17" 69°30")** है।

1° = 4 मिनट

1° =111.4 किलोमीटर होता है।

राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, जो कि संपूर्ण भारत का 10.41% है। भारत का कुल क्षेत्रफल

32,87,263 वर्ग किलोमीटर है जो संपूर्ण विश्व का 2.42% है।
1 नवंबर 2000 से पूर्व क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य मध्यप्रदेश था। लेकिन 1 नवंबर 2000 के बाद मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग हो जाने पर भारत का सबसे बड़ा राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान बन गया।
2011 में राजस्थान की कुल जनसंख्या 6,85,48,437 थी, जो कि कुल देश की जनसंख्या का 5.67% है।

- **कर्क रेखा राजस्थान में स्थितः-**

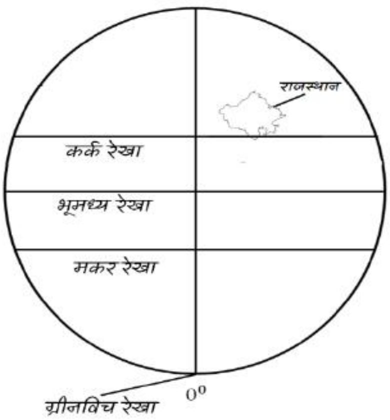

कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों से होकर गुजरती है-
1. गुजरात 2.राजस्थान 3.मध्यप्रदेश 4.छत्तीसगढ़ 5.झारखंड 6. पश्चिम बंगाल 7.त्रिपुरा 8.मिजोरम
राजस्थान में कर्क रेखा बाँसवाड़ा जिलें के मध्य से कुशलगढ़ तहसील से गुजरती है। इसके अलावा कर्क रेखा डूंगरपुर जिलें को भी स्पर्श करती है, अर्थात् कुल दो जिलों से होकर गुजरती है।
राजस्थान में कर्क रेखा की कुल लंबाई 26 किलोमीटर है।
राजस्थान का सर्वाधिक भाग कर्क रेखा के उत्तरी भाग में स्थित है।
राजस्थान का कर्क रेखा से सर्वाधिक नजदीकी शहर बाँसवाड़ा है।
भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है, अतः वहां पर तापमान अधिक होता है। जैसे-जैसे भूमध्य रेखा से दूरी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है और तापमान में कमी आती जाती है।
राजस्थान में बाँसवाड़ा जिलें में सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है जबकि गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी पड़ती है।
कारणः- बाँसवाड़ा सर्वाधिक दक्षिण में स्थित है, तथा श्रीगंगानगर सबसे उत्तर में स्थित है।
राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के अनुसार राज्य का सबसे गर्म जिला बाँसवाड़ा होना चाहिए, एवं राज्य का सबसे ठंडा जिला श्रीगंगानगर होना चाहिए, लेकिन वर्तमान में राज्य का सबसे गर्म व सबसे ठंडा जिला चूरु है। यह जिला सर्दियों में सबसे अधिक ठंडा एवं गर्मियों में सबसे अधिक गर्म रहता है इसका कारण यहां पाई जाने वाली रेत व जिप्सम है।

(निम्न मानचित्र को ध्यान से समझिए) –

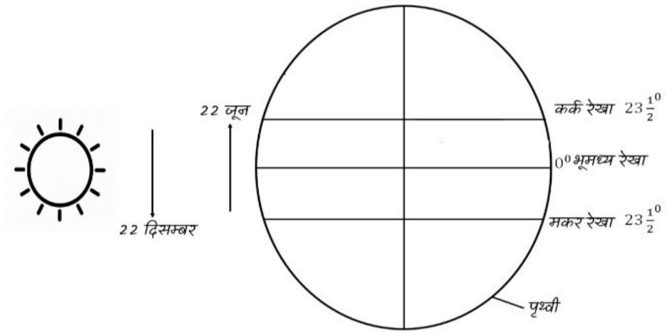

नोटः- जैसे कि ऊपर दिए गए मानचित्र में समझाया है कि, सूर्य 21 जून को सीधा कर्क रेखा पर और 22 दिसंबर को सीधा मकर रेखा पर चमकता है। इसके अलावा 21 मार्च और 23 सितंबर को सीधे भूमध्य रेखा पर चमकता है। अर्थात् 21 जून को कर्क रेखा पर सीधे चमकने के बाद जुलाई, अगस्त, सितंबर, दिसंबर में जैसे-जैसे समय बढ़ता जाता है वैसे-वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश मकर रेखा की ओर बढ़ता जाता है, फिर 22 दिसंबर तक मकर रेखा पर पहुंचने के बाद जनवरी, फरवरी, जून में जैसे-जैसे समय बढ़ता है वैसे-वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश कर्क रेखा की ओर बढ़ता है, अर्थात् सूर्य की सीधी किरणें कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच में पढ़ती है, इस क्षेत्र को ऊष्णकटिबंधीय क्षेत्र कहते है। ध्रुवों पर सूर्य की किरणें ना पहुंचने के कारण वहाँ वर्ष भर बर्फ पाई जाती है।
इस प्रकार राजस्थान का सबसे दक्षिणी जिला बाँसवाड़ा में सूर्य की सबसे ज्यादा सीधी किरणें पड़ती है, (कर्क रेखा के सबसे नजदीक होने के कारण) इसलिए बाँसवाड़ा को राजस्थान का सबसे गर्म जिला होना चाहिए, लेकिन चूरु सबसे गर्म जिला है, (कारण-रेत)। इसी प्रकार सबसे उत्तरी जिला श्रीगंगानगर में सूर्य की सबसे ज्यादा तिरछी किरणें पड़ती है, इसलिए श्रीगंगानगर को राजस्थान का सबसे ठंडा जिला होना चाहिए, लेकिन चूरु सबसे ज्यादा ठंडा जिला है (कारण-जिप्सम)।

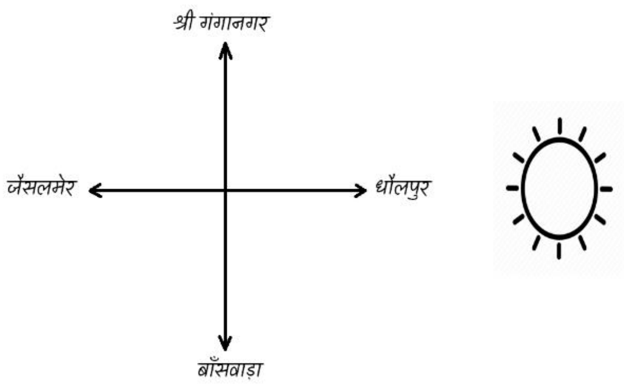

पूर्वी देशांतरीय भाग सूर्य के सबसे पहले सामने आता है, इस कारण सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त राजस्थान के पूर्वी भाग धौलपुर में होता है, जब कि सबसे पश्चिमी जिला

जैसलमेर है। अतः जैसलमेर में सबसे अंत में सूर्योदय व सूर्यास्त होता है।

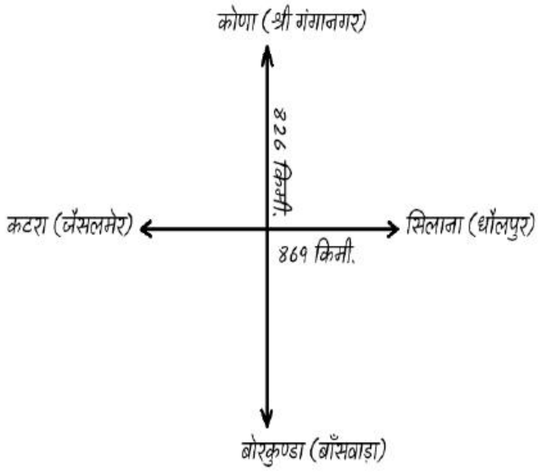

विस्तारः-राजस्थान राज्य की उत्तर से दक्षिण तक की कुल लंबाई 826 किलोमीटर है तथा इसका विस्तार उत्तर में श्रीगंगानगर जिलें के कोणा गांव से दक्षिण में बाँसवाड़ा जिलें की कुशलगढ़ तहसील के बोरकुंड गांव तक है।

इसी प्रकार पूर्व से पश्चिम तक की चौड़ाई 869 किलोमीटर है तथा विस्तार पूरब में धौलपुर जिलें के जगमोहनपुरा की ढाणी, सिलाना गांव से पश्चिम में जैसलमेर जिलें के कटरा गांव (सम तहसील) तक है।

आकृतिः-

विषम कोणीय चतुर्भुज या पतंग के आकार के समान है। राज्य की स्थलीय सीमा 5920 किलोमीटर (1070 अंतर्राष्ट्रीय व 4850 अंतर्राज्यीय) है।

रेडक्लिफ रेखाः-

रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है। इसके संस्थापक सर सिरिल एम रेडक्लिफ को माना जाता है। इसकी स्थापना 14/15 अगस्त 1947 को की गई। इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3,310 किलोमीटर है।

रेडक्लिफ रेखा पर भारत के तीन राज्य व दो केंद्र शासित प्रदेश स्थित हैं।

1. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी. लद्दाख को मिलाकर)

2. लद्दाख
3. पंजाब (547 कि.मी.)
4. राजस्थान (1070 कि.मी.)
5. गुजरात (512 कि.मी.)

- रेडक्लिफ रेखा के साथ सर्वाधिक सीमा- राजस्थान (1070 कि.मी.)
- रेडक्लिफ रेखा के साथ सबसे कम सीमा- गुजरात (512 कि.मी.)
- रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय:- श्रीनगर
- रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दूर राजधानी मुख्यालय:- जयपुर
- रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य:- राजस्थान
- रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य:- पंजाब
- रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा 1070 कि.मी. है। जो राजस्थान के 5 जिलों से लगती है।

1. श्रीगंगानगर-210 कि.मी.
2. बीकानेर-168 कि.मी.
3. फलौदी
4. जैसलमेर- 464 कि.मी.
5. बाड़मेर- 228 कि.मी.

- रेडक्लिफ पर सर्वाधिक सीमा जैसलमेर तथा न्यूनतम सीमा रेखा फलौदी बनाता है ।
- 41 जिले बनाने से पहले सबसे कम सीमा बीकानेर की लगती थी ।
- रेडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में श्रीगंगानगर के **हिन्दूमल कोट** से लेकर दक्षिण - पश्चिम में बाड़मेर के ब्राह्मणों की ढाणी, बाखासर गाँव, सेडवा तहसील तक विस्तृत है।
- रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिलें पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयार खान तथा सिंध प्रान्त के घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपारकर राजस्थान से सीमा बनाते हैं।
- राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा-बहावलपुर
- राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा- खैरपुर
- राजस्थान के साथ सीमा पर पाकिस्तान का सबसे बड़ा जिला बहावलपुर है।
- राजस्थान के साथ सीमा पर पाकिस्तान का सबसे छोटा जिला सुक्कुर है।

पाकिस्तान के दो राज्य (प्रांत) राजस्थान से छुते हैं।
1. पंजाब प्रांत
2. सिंध प्रांत

[रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।]

- राजस्थान से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) व न्यूनतम सीमा फलौदी (30 कि.मी. लगभग) की रेडक्लिफ रेखा से लगती है।
- रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय:- श्रीगंगानगर
- रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय:- बीकानेर
- रेडक्लिफ पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला:- जैसलमेर
- रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्रफल में छोटा जिला:- श्रीगंगानगर
- राजस्थान के केवल अन्तराष्ट्रीय सीमा वाले जिलें- 3 (बीकानेर, जैसलमेर, फलौदी)
- झालावाड मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा (520 कि.मी) बनाता है तथा बाड़मेर गुजरात के साथ न्यूनतम 14 कि.मी. की सीमा बनाता है।

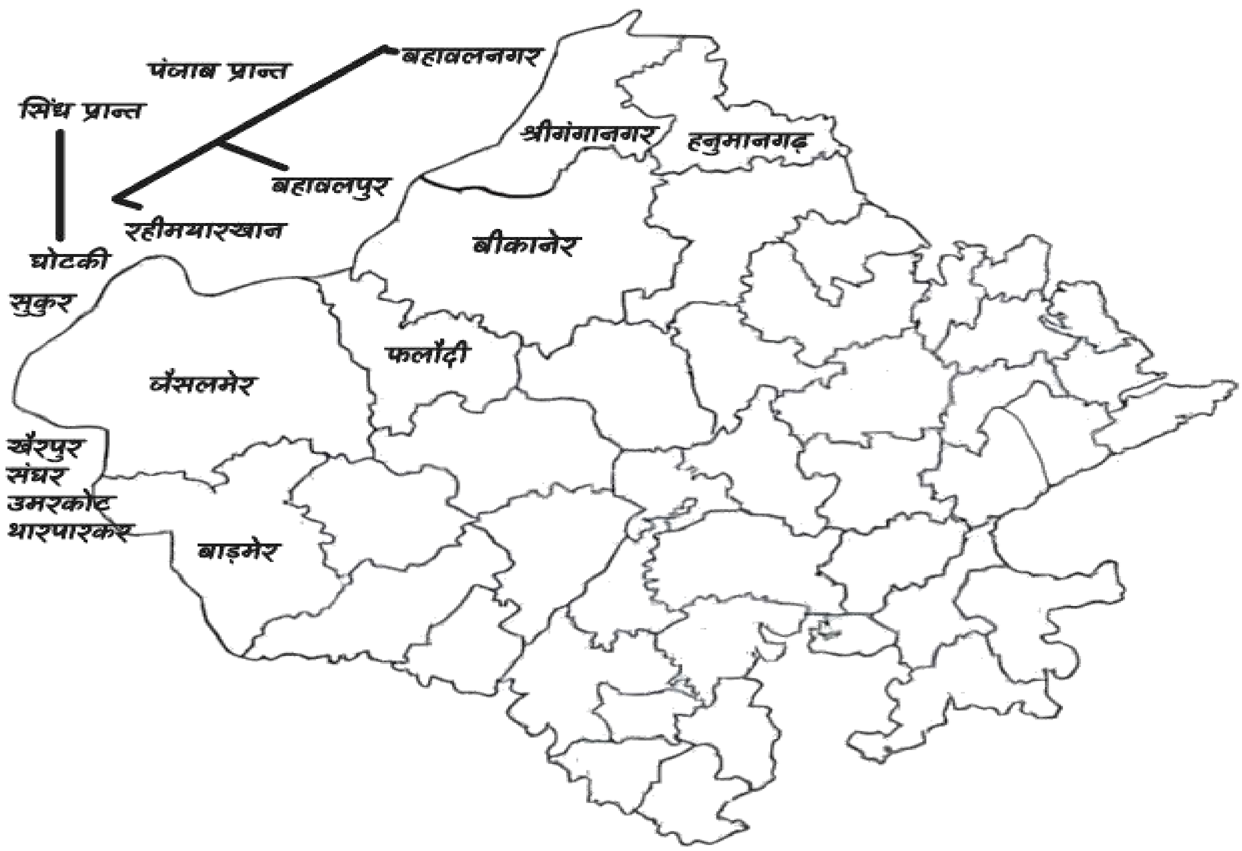

राजस्थान के 10 जिलों (धौलपुर, प्रतापगढ़, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, कोटा, झालावाड, बारां, बांसवाडा, करौली) की सीमा मध्यप्रदेश के 10 जिलों की सीमा से लगती है। (झाबुआ, रतलाम, मंदसौर, निमच, अगरमालवा, राजगढ, गुना, शिवपुरी, श्योंपुर, मुरैना) मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा झालावाड़ व न्यूनतम भीलवाड़ा की लगती है तथा सीमा के नजदीक मुख्यालय धौलपुर व दूर जिला मुख्यालय भीलवाड़ा है।

- मध्यप्रदेश राजस्थान की दक्षिण पूर्व दिशा में स्थित है।
- नीमच जिले के साथ राजस्थान की तीन दिशाओं से सीमा लगती है।

गुजरात (1022 किमी०)

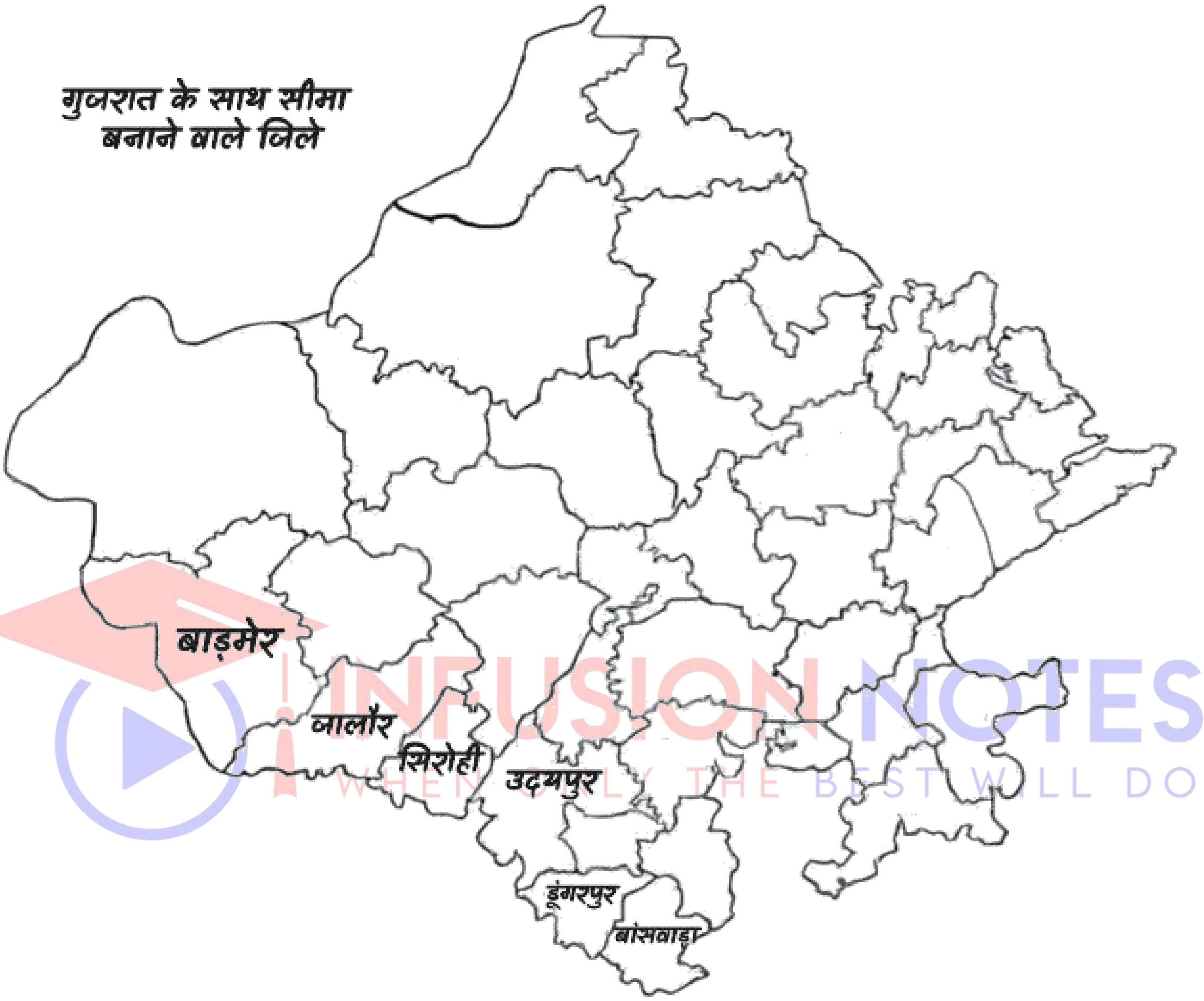

- राजस्थान के 6 जिलों (बाड़मेर, जालोर, सिरोही, उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा) की सीमा गुजरात के 6 जिलों से लगती है। (कच्छ, बनासकांठा, साबरकांठा, अरावली, माहीसागर, दाहोद)गुजरात के साथ सर्वाधिक सीमा उदयपुर व न्यूनतम सीमा बाड़मेर की लगती है तथा सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय डूंगरपुर व दूर मुख्यालय बाड़मेर है।
- गुजरात सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला बाड़मेर व छोटा जिला डूंगरपुर है।
- राजस्थान के पांच पड़ोसी राज्य है । पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात

शोर्ट ट्रिक

"उदय डूंगर पर बासि बाड़ा जला"

सूत्र		**जिला**
उदय	-	उदयपुर
डूँगर पर	-	डूंगरपुर
बां	-	बाँसवाड़ा
सि	-	सिरोही
बाड़	-	बाड़मेर
जला	-	जालौर

राजस्थान की सीमा से लगने वाले गुजरात के जिले है।

"सादा पँचक बना माही"

सूत्र		**जिला**
सा	-	साबरकाठा
दा	-	दाहोद
पंच	-	पंचमहल
क	-	कच्छ
बना	-	बनासकंठा
माही	-	माहीसागर

अन्य तथ्य

- 26 जनवरी 1950 को संवैधानिक रूप से हमारे राज्य का नाम राजस्थान पड़ा।
- राजस्थान अपने वर्तमान स्वरूप में 1 नवम्बर 1956 को आया । इस समय राजस्थान में कुल 26 जिले थे।
- **26 वाँ जिला** – अजमेर- 1 नवम्बर, 1956
- **27 वाँ जिला** – धौलपुर- 15 अप्रैल, 1982, यह भरतपुर से अलग होकर नया जिला बना।
- **28 वाँ जिला**- बारां- 10 अप्रैल, 1991, यह कोटा से अलग हो कर नया जिला बना।
- **29 वाँ जिला** – दौसा- 10 अप्रैल, 1991, यह जयपुर से अलग होकर नया जिला बना।
- **30 वाँ जिला राजसंमद** – 10 अप्रैल, 1991, यह उदयपुर से अलग होकर नया जिला बना।
- **31 वाँ जिला** – हनुमानगढ़- 12 जुलाई, 1994, यह श्रीगंगानगर से अलग होकर नया जिला बना।
- **32 वाँ जिला करौली** 19 जुलाई, 1997, यह सवाई माधोपुर से अलग होकर नया जिला बना।
- **33 वाँ जिला – प्रतापगढ़- 26 जनवरी, 2008,** यह तीन जिलों से अलग होकर नया जिला बना।
  1. चित्तौड़गढ़- छोटीसादड़ी, आरनोद, प्रतापगढ़ तहसील
  2. उदयपुर- धारियाबाद तहसील
  3. बाँसवाड़ा- पीपलखुट तहसील

- प्रतापगढ़ जिला परमेश चन्द कमेटी की सिफारिश पर बनाया गया ।
- प्रतापगढ़ जिले ने अपना कार्य 1 अप्रैल, 2008 से शुरू किया।
- **प्रतापगढ़ को प्राचीन काल में कांठल व देवला / देवलीया के नाम से** जाना जाता था।

राजस्थान में 7 अगस्त 2023 को **राम लुभाया समिति** के सुझावों मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 19 और नए जिलें बनानें की घोषणा की। इसके साथ ही राजस्थान में जिलों की संख्या 33 से बढ़कर 50 हो गयी तथा 3 नये संभाग बनाये गए जिससे संभागों की संख्या 7 से बढ़कर 10 हो गयी।

नये जिलों के गठन के लिए 5 अगस्त 2023 को अधिसूचना जारी की गयी ।

6 अगस्त 2023 को अधिसूचना का गजट में प्रकाशन हुआ।

7 अगस्त 2023 से अधिसूचना प्रभावी हुई।

3 नए संभाग इस प्रकार हैं-

बांसवाड़ा, पाली व सीकर

19 नए जिले निम्नलिखित हैं-

अनूपगढ़, बालोतरा, ब्यावर, डीग, डीडवाना-कुचामन, दूदू, गंगापुर सिटी, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, केकड़ी, कोटपूतली-बहरोड, खैरथल, नीमकाथाना, सलूंबर, सांचौर और शाहपुरा

बाद में इन नए जिलों व संभागो की समीक्षा के लिए भजनलाल सरकार ने एक समिति बनायीं जिसमे 5 सदस्य एवं समिति का संयोजक डॉ. प्रेमचंद बैरवा को बनाया गया।

राज्य सरकार ने गहलोत सरकार द्वारा प्रस्तावित 3 जिलों (कुचामन, मालपुरा, सुजानगढ़) को रद्द कर दिया।

वर्तमान सरकार द्वारा 29 दिसम्बर 2024 को जारी अधिसूचना द्वारा नये 9 जिलों व 3 संभागों को निरस्त कर दिया ।

निरस्त किए गए जिले:

- अनूपगढ़
- जयपुर ग्रामीण
- जोधपुर ग्रामीण
- दूदू
- केकड़ी
- नीम का थाना
- गंगापुर सिटी
- सांचौर
- शाहपुरा

निरस्त किए गए संभाग:

- बांसवाड़ा
- पाली
- सीकर

बालोतरा -

- बाड़मेर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला बालोतरा गठित किया गया है ।
- इस जिले में 7 तहसील (पचपदरा, कल्याणपुर, सिवाना, समदड़ी, बायतु, गिड़ा, सिणधरी) हैं।

डीडवाना-कुचामन -

- नागौर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला डीडवाना-कुचामन गठित किया गया है।
- इस जिले में 8 तहसील (डीडवाना, मौलासर, छोटी खाटू, लाडनूं, परबतसर, मकराना, नावां, कुचामनसिटी) हैं।

डीग -

- भरतपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला डीग गठित किया गया है।
- इस जिले में 9 तहसील (डीग, जनूथर, कुम्हेर, रारह, नगर, सीकरी, कामां, जुरहरा, पहाड़ी) हैं।

फलौदी :

- जोधपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला फलौदी गठित किया गया है।
- इस जिले में 8 तहसील (फलौदी, लोहावट, आऊ, देचू, सेतरावा, बाप, घंटियाली, बापिणी) हैं।
- इसमें जैसलमेर जिले की नोख तहसील का कुछ क्षेत्र शामिल किया गया है।

कोटपूतली-बहरोड

- **जिला मुख्यालय** - कोटपूतली-बहरोड़

- जयपुर एवं अलवर जिलों का पुनर्गठन कर नया जिला कोटपूतली- बहरोड़ गठित किया गया है
- कोटपूतली - बहरोड़ जिले में 8 तहसील (बहरोड़, बानसूर, नीमराना, मांढण, नारायणपुर कोटपूतली. विराटनगर, पावटा) हैं। कोटपूतली, विराटनगर, पावटा को जयपुर से जोड़ा गया है, अन्य सभी को अलवर से जोड़ा गया है।

खैरथल-तिजारा –

- **जिला मुख्यालय** – खैरथल
- अलवर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला खैरथल तिजारा गठित किया गया है।
- नवगठित खैरथल-तिजारा जिले में 7 तहसील (तिजारा, किशनगढ़बास, खैरथल, कोटकासिम, हरसोली, टपूकडा, मुंडावर) हैं।

ब्यावर :-

- **जिला मुख्यालय** - ब्यावर
- अजमेर, पाली और भीलवाड़ा जिलों का पुनर्गठन करके नया जिला ब्यावर गठित किया गया है।
- इस नव गठित ब्यावर जिले में 7 उपखंड (ब्यावर, टाटगढ़, जैतारण, विजयनगर, रायपुर, मसूदा और बदनोर) शामिल किए गए हैं।

सलूम्बर :-

जिला मुख्यालय - सलूम्बर

उदयपुर जिले का पुनर्गठन करके नए जिले सलूम्बर का गठन किया गया हैं।

सलूंबर जिले में 5 उपखंड (सराडा, सेमारी, लसाडिया, झल्लारा और सलूम्बर) शामिल किए गए हैं।

राजस्थान के संभाग

30 मार्च 1949 को राजस्थान में संभागीय व्यवस्था की शुरुआत हुई थी ।

शुरुआत में राजस्थान में 5 संभाग (जयपुर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर, बीकानेर)थे।

24 अप्रैल 1962 को संभागीय व्यवस्था को तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाडिया ने बंद कर दिया ।

संभागीय व्यवस्था की पुनः शुरुआत 26 जनवरी 1987 को तत्कालीन मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी नें की तथा अजमेर को जयपुर से अलग कर छठा संभाग बनाया ।

4 जून 2005 को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे नें भरतपुर को सातवाँ संभाग बनाया ।

राजस्थान के 7 संभागो के नाम निम्नलिखित है-

1. अजमेर	2. उदयपुर
3. कोटा	4. जयपुर
5. जोधपुर	6. बीकानेर
7. भरतपुर	

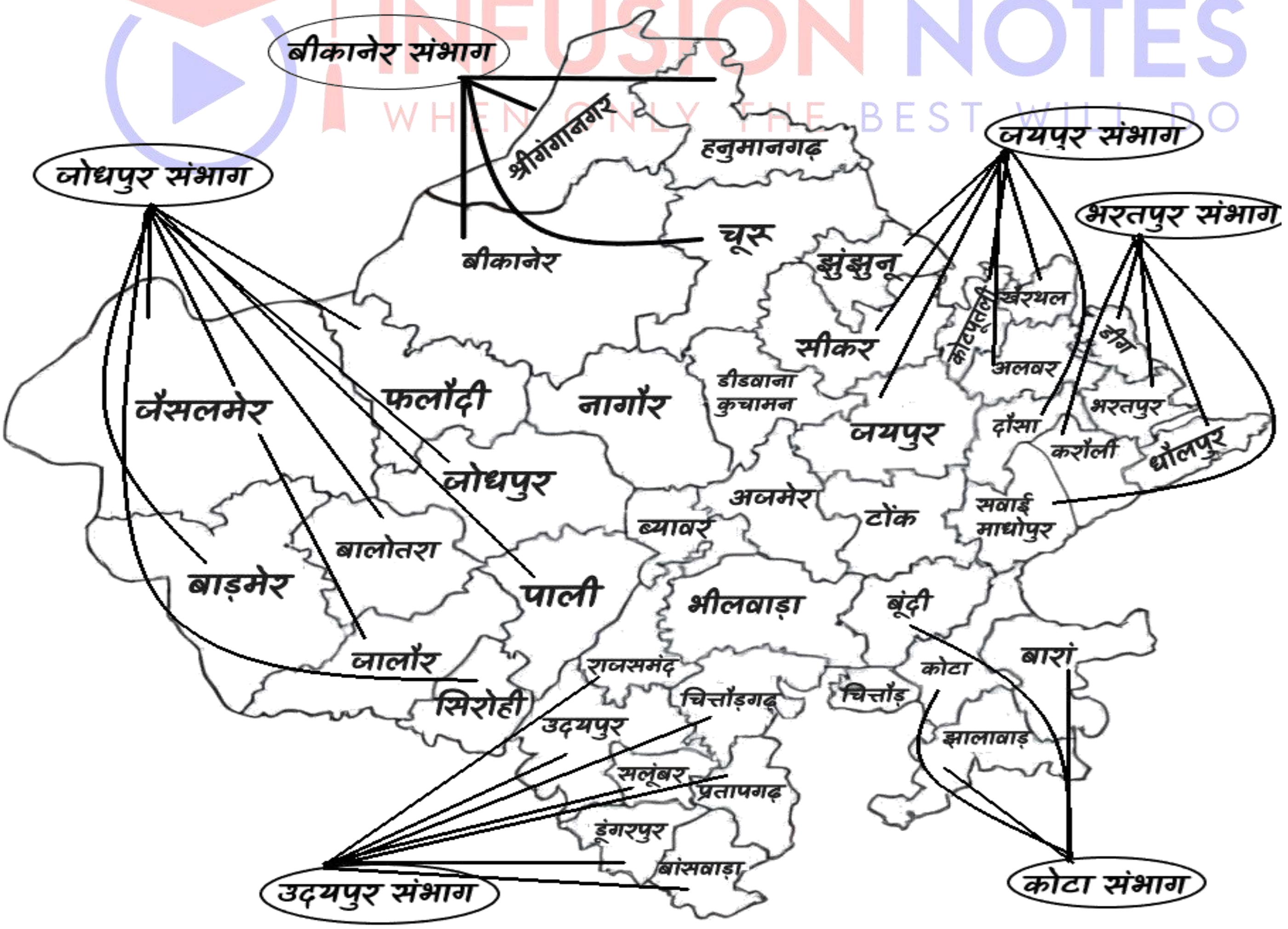

राज्य की कुल क्षेत्रफल का 7% हिस्सा में है जिस पर राज्य की कुल जनसंख्या का 11% हिस्सा निवास करता है।

2. यहां की जलवायु आद्र एवं अति- आद्र जलवायु पाई जाती है।
3. इस प्रदेश में मुख्य रूप से काली एवं लाल मिट्टियां पाई जाती है काली मिट्टी पाई जाने का कारण यहां पर पठारी क्षेत्र है पठारी क्षेत्र का निर्माण लावा के द्वारा होता है लाल मिट्टी करौली, धौलपुर, सवाई माधोपुर में पाई जाती है।
4. इस प्रदेश में मुख्य रूप से कपास, गन्ना, चावल, खट्टे रसदार फल, सब्जियां आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है झालावाड़ में मौसमी /संतरा सर्वाधिक होता है।
5. राजस्थान के इस क्षेत्र प्रदेश में धात्विक एवं अधात्विक दोनों प्रकार के खनिज पाए जाते हैं जैसे – कोटा में कोटा स्टोन, भीलवाड़ा में अभ्रक, टोंक में तांमडा (एक अधात्विक खनिज है) यहां मुख्य रूप से साल एवं सागवान, जामुन, बरगद आदि के वनस्पति के रूप में पाए जाते हैं। बांस को आदिवासियों का "हरा सोना" कहा जाता है आदि वासियों का कल्प वृक्ष महुआ को कहा जाता है।
6. इस क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा 80 सेंटी मीटर से 120 सेंटी मीटर तक होती है इस प्रदेश को दो भागों में बांटा गया है।

- विन्ध्याचल चट्टानी प्रदेश जिसमें चूना पत्थर चिकनी मिट्टी
- हाड़ौती का पठार

7. **महान सीमा भ्रंश-** अरावली पर्वतमाला के पूर्व में स्थित है जो कि विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी को अरावली से अलग करता है ।

   राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक स्मारक **"महान सीमा भ्रंश"** सतूर (बूंदी) में स्थित है ।

अध्याय – 2

जलवायु

जलवायु –किसी स्थान पर दीर्घ काल की औसत वायुमंडलीय दशाओं को (तापमान, वायुदाब, आद्रता, वर्षा, वायु वेग) को जलवायु कहा जाता है । (समय लगभग 30 से 35 वर्ष)

मौसम –किसी स्थान पर अल्प समय की औसत वायुमंडलीय दशाओं को मौसम कहा जाता है जैसे कुछ घंटे या कुछ दिन ।

अतः निष्कर्ष निकालते हैं कि वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के कारण स्थानीय एवं वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन हो रहे हैं, जैसे बाड़मेर में बाढ़, वर्षा की तीव्रता व आवृत्ति में परिवर्तन एवं अचानक वायु परिवर्तन हो रहे हैं अतः इन्हें रोकने के लिए क्रमबद्ध विकास पर्यावरण मित्र विकास एवं पर्यावरण प्रबंधन की आवश्यकता है।

राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक-

प्रिय छात्रों अब हम यह समझेंगे कि राजस्थान की जलवायु के कौन- कौन से कारक है जो प्रभावित करते हैं अर्थात् किन की वजह से राजस्थान की जलवायु में परिवर्तन आता है?

राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है, जिसके अलग-अलग स्थानों पर अलग- अलग प्रकार की विशेषताएं पाई जाती है जैसे कहीं पर्वत है तो कहीं पर पठार, कहीं मरुस्थल, कहीं मैदानी भाग इत्यादि यह सब राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करते हैं आइए जानते हैं कैसे-

1. **अक्षांश एवं देशांतर स्थिति-** राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23 डिग्री 3 मिनट उत्तरी अक्षांश से 30 डिग्री 12 मिनट उत्तरी अक्षांश तक विस्तृत है इसी कारण राजस्थान के बाँसवाड़ा जिलें से नीचे का भाग कर्क रेखा के नीचे ऊष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में एवं राजस्थान के ऊपर का भाग उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में आता है ग्रीष्म काल के समय सूर्य की किरणें बाँसवाड़ा जिलें में लगभग सीधा एवं गंगानगर जिलें में सर्वाधिक तिरछी होती है राजस्थान में ऊष्ण एवं उपऊष्ण कटिबंधीय जलवायु पाई जाती है जिसकी वजह से यहां पर मौसम में बदलाव देखने को मिलता है ।

1. **समुद्र तल से दूरी-** राजस्थान की समुद्रतल से दूरी अधिक होने के कारण यहां शुष्क जलवायु पाई जाती है राजस्थान की अरब सागर से दूरी 400 किलों मीटर एवं कच्छ की खाड़ी से 225 किलों मीटर एवं खंभात की खाड़ी से लगभग 275 किलों मीटर है, अर्थात् राजस्थान एवं पश्चिमी बंगाल दोनों समान अक्षांशीय स्थिति पर स्थित होते हुए भी समुद्र के तट के कारण पश्चिम बंगाल में ऊष्ण आर्द्र जलवायु एवं राजस्थान में शुष्क जलवायु पाई जाती है ।

2. **अरावली पर्वतमाला की स्थिति-** राजस्थान में अरावली पर्वतमाला मध्यवर्ती भाग में स्थित है जिसके पश्चिम में

मरुस्थल एवं दक्षिण- पूर्व में पठारी भाग स्थित है अर्थात् अरावली पर्वतमाला मानसून के समांतर होने के कारण इसके पश्चिमी भाग में कम वर्षा होती है जिससे यहां की जलवायु शुष्क पाई जाती है।

3. **समुद्र तल से ऊंचाई-** राजस्थान में अरावली पर्वतमाला की समुद्र तल से औसत ऊंचाई 930 मीटर है जबकि अन्य क्षेत्र की औसत ऊंचाई 350 मीटर है इसी कारण अत्यधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में वर्षा, वनस्पति, एवं आर्द्रता अधिक पाई जाती है जबकि निचले स्थानों पर उनकी कमी पाई जाती है जिससे अलग- अलग स्थानों पर अलग-अलग प्रकार की जलवायु पाई जाती है ।

4. **वनस्पति-** राजस्थान में पूर्वी एवं दक्षिण पूर्वी भाग में अधिक वनस्पति है, जबकि मरुस्थलीय प्रदेशों में बहुत कम वनस्पति पाई जाती है इसी कारण इन क्षेत्रों में जलवायु में अंतर पाया जाता है ।

5. **धरातल की बनावट-** राजस्थान में मरुस्थल,पर्वत, पठार और मैदान सभी प्रकार की धरातलीय संरचना पाई जाती है, और इसी कारण राजस्थान में जलवायु प्रभावित होती है।

6. **मृदा की संरचना-** अरावली के पश्चिम में रेतीली मिट्टी जिसमें मोटे- मोटे कण पाए जाते हैं। इसी कारण यहां दिन के समय अधिक तापमान एवं रात्रि के समय कम तापमान पाया जाता है एवं मिट्टी में आर्द्रता कम एवं मौसम में सूखता अधिक होती है, जबकि अरावली के पूर्व में चिकनी मिट्टी जिसमें बारीक कण होते हैं जो धीरे-धीरे गर्म एवं धीरे-धीरे ठंडे होते हैं इसी कारण यहां मौसम में आर्द्रता बनी रहती है एवं वनस्पति आवरण अधिक पाया जाता है।

8. **मानसून-**
यह भी राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करता है।

जलवायु से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- राजस्थान का सबसे गर्म जिला चूरू है।
- राजस्थान में सबसे शुष्क फलौदी जिला है।
- राजस्थान का गर्मियों में सबसे ठंडा स्थान सिरोही जिलें में स्थित माउंट आबू है इसलिए माउंट आबू को राजस्थान का शिमला कहा जाता है ।
- राजस्थान का गर्मियों में सर्वाधिक तापमान दैनिक तापान्तर वाला जिला जैसलमेर है राजस्थान में गर्मियों में सर्वाधिक धूल भरी आंधियां श्रीगंगानगर जिलें में चलती है ।
- राजस्थान में विशेष कर पश्चिमी रेगिस्तान में चलने वाली गर्म हवाओं कोलू कहा जाता है, राजस्थान में गर्मियों में स्थानीय चक्रवात के कारण जो धूल भरे बवंडर बनते हैं, उन्हें भभूल्या कहा जाता है ।
- गर्मियों में राजस्थान में दक्षिण भागों में अरब सागर ये चक्रवात के कारण तेज हवाओं के साथ चक्रवाती वर्षा होती है ।
- राजस्थान में मानसून की शाखा सर्वप्रथम दक्षिण पश्चिम में प्रवेश करती है, अरावली के मानसून के समांतर होने के कारण राजस्थान में कम एवं अनियमित वर्षा होती है।
- राजस्थान का सबसे आर्द्र जिला झालावाड़ है जबकि राजस्थान का सबसे आर्द्रस्थल सिरोही जिलें में स्थित माउंट आबू है।
- राजस्थान का सबसे शुष्क जिला जैसलमेर है।
- राजस्थान में वार्षिक वर्षा में विषमता का प्रतिशत सर्वाधिक जैसलमेर में एवं बाड़मेर में होता है। राजस्थान में सर्वाधिक वर्षा मानसून की दक्षिण पश्चिमी शाखा से होती है राजस्थान में सितंबर तथा अक्टूबर में लौटते मानसून से भी वर्षा होती है।
- पृथ्वी के परिक्रमण काल में 22 दिसंबर को सूर्य की किरणें मकर रेखा पर लम्बत गिरती हैं, इस के कारण पृथ्वी के दक्षिणी गोलार्ध में दिन बड़ा, रात छोटी एवं ग्रीष्म ऋतु होती है तथा उत्तरी गोलार्ध में दिन छोटा तथा रात बड़ी होती है।
- श्री गंगा नगर राजस्थान का सबसे उत्तर में स्थित जिला है इसलिए 22 दिसंबर को श्रीगंगानगर में सूर्य की किरणें सर्वाधिक तिरछी पड़ती है सर्दियों में राजस्थान का सबसे ठंडा जिला चूरू है।
- सर्दियों में सिरोही जिलें के माउंट आबू का तापमान हिमांक बिंदु से नीचे चला जाता है।
- राजस्थान में भूमध्य सागरीय पश्चिमी विक्षोभ के कारण जो वर्षा होती है उसे राजस्थान में मावठ के नाम से जानते हैं।
- राजस्थान के दक्षिण पश्चिम, दक्षिण तथा दक्षिण पूर्वी भागों में सर्दियों में प्रातः काल में तापमान की कमी के कारण "पाला" पड़ता है ।
- राजस्थान में वर्षा की मात्रा व समय निश्चित नहीं है। जहाँ झालावाड़ में 40 दिन तक बारिश होती है। वहीं जैसलमेर में वर्षा के दिनों की संख्या मात्र 5 दिन है।
- **राजस्थान में मानसून का प्रवेश 17 जून के लगभग माना जाता है।**
- **राजस्थान की समस्त वर्षा गर्मियों में जुलाई व अगस्त में होती है** तथा वर्षा की कुछ मात्रा दिसम्बर व जनवरी में मावठ (शीतकालीन वर्षा) के रूप में प्राप्त होती है।
- मावठ का मुख्य कारण पश्चिमी विक्षोभ होतें हैं तथा इनकी उत्पति भूमध्यसागर एवं केस्पियन सागर से होती है ।

<u>राजस्थान में जलवायु के आधार पर ऋतु का विवरण</u>

<u>राजस्थान की जलवायु की प्रमुख विशेषताएं-</u>

राजस्थान "ऊष्ण कटिबंधीय शुष्क मानसूनी" जलवायु के अंतर्गत आता है यहां पर धरातलीय जलवायु पाई जाती है, इस जलवायु की प्रमुख निम्नलिखित विशेषताएं हैं-

1. **अत्यधिक उच्च तापक्रम एवं तापान्तर**-राजस्थान की जलवायु की प्रमुख विशेषता है कि यहां पर अत्यधिक उच्च तापक्रम एवं अत्यधिक तापन्तर पाया जाता है यहां गर्मियों में औसत तापमान 35 डिग्री से 40 डिग्री सेल्सियस रहता है वहीं सर्दियों में 12 डिग्री से 17 डिग्री सेल्सियस पाया जाता है साथ में ही क्षेत्रवार राजस्थान में अधिक अंतर देखने को मिलते हैं । कभी-कभी गर्मियों में ताप क्रम 49 डिग्री सेल्सियस तक सर्दियों में हिमांक बिंदु से नीचे भी चला जाता है।

2. ***अनियमित एवं अनियंत्रित वर्षा-*** *जिसे खंड वर्षा भी कहा जाता है यहाँ की जलवायु की यह विशेषता है जैसे अतिवृष्टि, अनावृष्टि, कम वायुदाब एवं अत्यधिक आर्द्रता राजस्थान की जलवायु में कम तापमान का पाया जाना राजस्थान की जलवायु की विशेषता है, साथ ही लू जैसे हवाओं के कारण शुष्क जलवायु पाई जाती है।*
3. *राजस्थान में जलवायुवीय विविधता अधिक है अर्थात् यहां सभी प्रकार की जलवायु पाई जाती है।*
4. *पश्चिमी विक्षोभ मावठ एवं मानसूनी वर्षा राजस्थान की जलवायु में अतिशय दशाएं पाई जाती है एवं अत्यधिक जलवायुवीय विविधता मिलती है।*

<u>राजस्थान में कम वर्षा के कारण-</u>

राजस्थान में विशिष्ट रूप से ऊष्ण कटिबंधीय शुष्क मानसूनी जलवायु पाई जाती है जहाँ वर्षा सापेक्ष रूप से कम होती है (लगभग 50-55%)। राजस्थान में कम वर्षा की निम्नलिखित कारण इस प्रकार है जैसे-

दक्षिण पश्चिमी मानसून हवाएं राजस्थान में प्रवेश करने से पहले ही अपना जल गंगा के मैदान में समाप्त कर चुकी होती है, क्योंकि अरावली पर्वतमाला एक समांतर पर्वतमाला है, जो कि मानसून को रोक नहीं पाती ।

जो मानसूनी हवाएं राजस्थान में प्रवेश करते हैं वहभी गर्म प्रदेश में अपनी आर्द्रता 50 से 90 फीसदी तक कम कर देती है।

राजस्थान में प्राकृतिक अवरोधों का अभाव है,क्योंकि अरावली पर्वतमाला के रूप में जो एक मात्र प्राकृतिक अवरोध है वह भी अरब सागर में मानसून का सामना नहीं कर पाता और नीचा होने के कारण हवाओं को नहीं रोक पाता है।

राजस्थान में जलवायु की अतिशय विशेषताएं पाई जाती हैं, इसके अतिरिक्त राजस्थान में कम वर्षा के अनेक कारण हैं जैसे-

- *वनस्पति का अभाव*
- *मरुस्थल का विद्यमान होना*
- *कंक्रीट के जंगल*
- *जलवायु परिवर्तन*
- *जैव विविधता का ह्रास*

<u>राजस्थान के जलवायु प्रदेश-</u>

राजस्थान में लगभग सभी प्रकार की जलवायु पाई जाती है, वह प्रदेश जहाँ विशिष्ट जलवायुविक तत्वों में औसत आंतरिक समरूपता पाई जाती है "जलवायु प्रदेश" कहलाता है।

इस दृष्टि से कोपेन, थार्नवेट, तथा ट्रिवार्था ने राजस्थान की जलवायु विभिन्न जलवायु प्रदेशों में विभाजित किया है परंतु सामान्यतः राजस्थान में पांच प्रकार की जलवायु पाई जाती है –

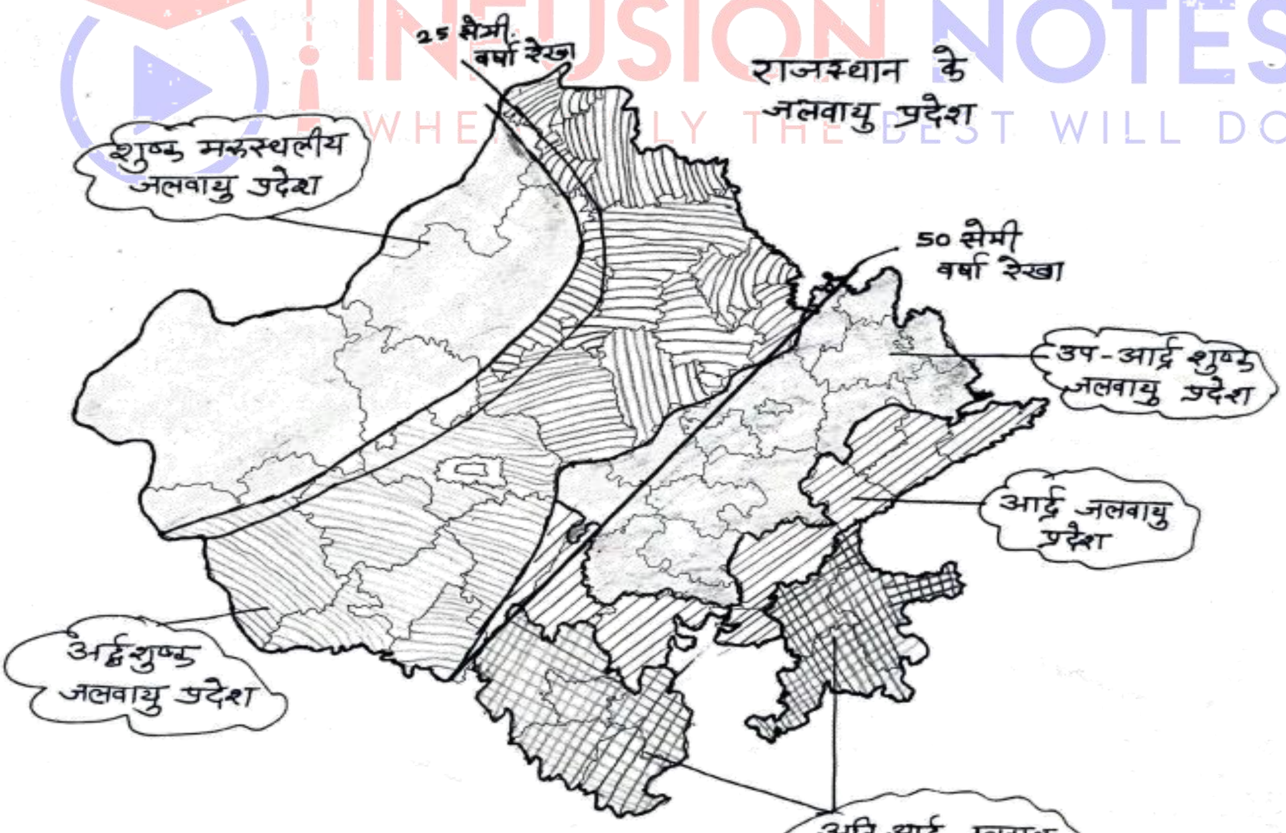

1. शुष्क जलवायु प्रदेश -

क्षेत्र- *जैसलमेर, उत्तरी बाड़मेर, बीकानेर का पश्चिमी भाग, फलौदी और श्री गंगानगर जिला का दक्षिणी भाग ।*

वर्षा – 0 से 20 सेमी.,

तापमान- 30 डिग्री से अधिकतम 40 डिग्री सेल्सियस तक (गर्मियों में)

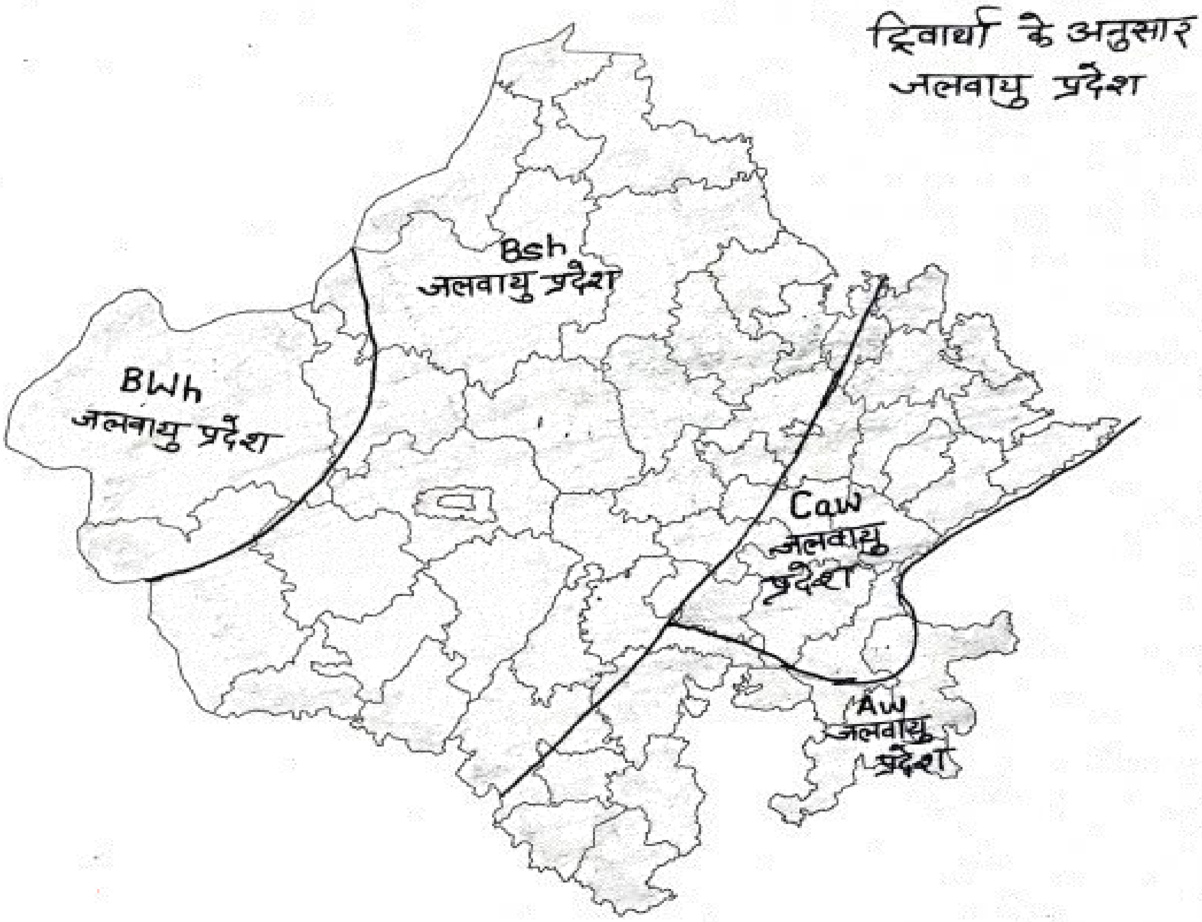

1. Aw / उष्ण कटिबंधीय आर्द्र जलवायु प्रदेश –

क्षेत्र – उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, सलूम्बर, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, बारां, कोटा व झालावाड़

इस जलवायु प्रदेश का प्रतिनिधित्व जिला डूंगरपुर है।

औसत तापमान – ग्रीष्मकाल में 30 से 35 डिग्री सेन्टीग्रेड तथा शीतकाल में 15 से 20 डिग्री सेन्टीग्रेड

2. Bwh / शुष्क मरुस्थली जलवायु प्रदेश –

क्षेत्र – जैसलमेर, फलौदी, बाड़मेर तथा दक्षिणी पश्चिमी बीकानेर

इस जलवायु प्रदेश का प्रतिनिधित्व जैसलमेर जिला करता है।

औसत तापमान – ग्रीष्मकाल में 40 से 45 डिग्री सेन्टीग्रेड तथा सर्दियों में 10 से 15 डिग्री सेन्टीग्रेड

3. Bsh / उष्ण एवं अर्द्ध उष्ण कटिबंधीय / स्टेपी तुल्य जलवायु प्रदेश –

क्षेत्र – गंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, चुरु, झुंझुनू, डीडवाना-कुचामन, नागौर, जोधपुर, पूर्वी फलौदी, जालौर, सिरोही, राजसमन्द, उदयपुर, पाली, भीलवाड़ा, अजमेर, ब्यावर, जयपुर, टोंक, कोटपूतली-बहरोड़

इस जलवायु प्रदेश का प्रतिनिधित्व नागौर जिला करता है।

औसत तापमान – ग्रीष्मकाल में 35 से 40 डिग्री सेन्टीग्रेड तथा सर्दियों में 14 से 20 डिग्री सेन्टीग्रेड

इस जलवायु प्रदेश में स्टेपी प्रकार की वनस्पति पायी जाती है।

4. Caw / अर्द्ध उष्ण आर्द्र जलवायु प्रदेश –

क्षेत्र- खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, अलवर, जयपुर, धौलपुर, डीग, दौसा, भरतपुर, पूर्वी टोंक, कोटा, बूंदी, सवाईमाधोपुर, करौली

इस जलवायु प्रदेश का प्रतिनिधित्व जिला सवाईमाधोपुर है।

औसत तापमान – ग्रीष्मकाल में 35 से 40 डिग्री सेन्टीग्रेड तथा सर्दियों में 13 से 21 डिग्री सेन्टीग्रेड।

वह जिला जहाँ अनुसूचित जाति की जनसंख्या में दशकीय (2001-2011) वृद्धि सर्वाधिक रही।	बाड़मेर (41.2%)
वह जिला जहाँ अनुसूचित जाति की जनसंख्या में दशकीय (2001-2011) वृद्धि न्यूनतम रही।	डूंगरपुर (13.7%)
यह जिला जहाँ अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या सर्वाधिक निवास करती है।	उदयपुर (15,25,289)
वह जिलाजहाँ अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या सबसे कम निवास करती है।	बीकानेर (7,779)
वह जिला जहाँ अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या में दशकीय (2001-2011) वृद्धि सर्वाधिक रही	नागौर (60.4%)
वह जिला जहाँ अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या में दशकीय (2001-2011) वृद्धि सबसे कम रही	गंगानगर (-8.6%)

अध्याय – 9
जनजातियाँ

राजस्थान की जनजातियाँ

सहरिया :

- राजस्थान की एकमात्र आदिम जनजाति (भारत सरकार द्वारा घोषित)।
- बारां जिलें के किशनगंज एव शाहबाद जिलों में सर्वाधिक संख्या।
- **सहरियों का मुखिया** : कोतवाला
- बड़ें गांव को 'सहराना' कहा जाता है।
- छोटो बस्ती को 'सहरोल' कहा जाता है।
- गाँव के बीच में स्थित सामुदायिक केन्द्र दालिया/हथाई कहलाता है।
- सहरियों की पंचायती व्यवस्था त्रि-स्तरीय होती है/
- **पंचताई** : पाँच गाँवों की पंचायती।
- **एकदसिया** : 11 गाँवों की पंचायती।
- **चौरासिया** : 84 गाँवों की पंचायती।
- चौरासी गाँवों की सभा सीताबाडो के वाल्मिकि मंदिर में होती है।
- सहरिया 'वाल्मिकि' को अपना आदि पुरूष मानते है।
- सहरियों की कुलदेवी कोडिया माता।
- तेजाजी एवं भैरव की भी पूजा करते हैं ।
- दीपावली पर 'हीड़' गाते हैं।
- होली के अवसर पर लट्ठमार होली खेलते हैं। राई नृत्य किया जाता है।
- मकर संक्रान्ति के अवसर पर लकड़ी के डण्डो से लेंगी खेला जाता है।
- वर्षा ऋतु में आला एवं लहंगी गीत गाया जाता है।
- **कपिलधारा का मेला** : कार्तिक पूर्णिमा
- **सीताबाड़ी का मेला** : ज्येष्ठ पूर्णिमा। इसे 'सहरियों का कुम्भ' भी कहते है।
- सहरिया महिलाएँ गोदना गुदवाती है परंतु पुरुषों का मनाही है।
- **धारी संस्कार** : मृतक के तीसरे दिन उसकी अस्थियों एवं राख को एक बर्तन से ढककर छोड़ दिया जाता है, अगले दिन उस जगह वैसी ही आकृति बनी होती है, यह समझा जाता है कि व्यक्ति का अगला जन्म उसी आकृति के अनुसार होगा।
- सहरिया पेड़ों पर घर बनाकर रहते हैं। उसे 'गोपना' कहते हैं ।
- अनाज एवं घरेलू सामान रखने की छोटी कोठी : कुसिली।
- अनाज व घरेलू सामान रखने की बड़ी कोठी : भडली।

अर्थव्यवस्था : सहरिया लोगों को जहाँ संमतल भूमि मिल जाती है पर कृषि एवं पशुपालन करते हैं। कृषि कार्यों में 45 प्रतिशत, कृषक मजदूरी 35 प्रतिशत कार्यों में संलग्न व शेष वनों से लकड़ी व वन उपज एकत्रित करना, खनन कार्य करना। इस जाति में शिक्षा का अत्यंत अभाव है। अब शिक्षा

का विकास हो रहा हैं। सहरिया क्षेत्र में मामूनी की. संकल्प संस्था, अच्छा कार्य कर रही है ।

कंजरः-

- मुख्यतया हाड़ौती क्षेत्र में।
- मुख्य व्यवसाय : चोरी करना।
- चोरी करने से पूर्व देवता से आशीर्वाद मांगते है, जिसे ये'पातो मांगना' कहते है।
- जोगणिया माता (चितौड़गढ़) : कंजरों की कुलदेवी।
- चौथ माता (चौथ का बरवाड़ा, सवाई माधोपुर)
- रक्त दंजी माता : बूंदी।
- हनुमान जी : आराध्य देव।
- हाकम राजा का प्याला पीने के बाद झूठ नहीं बोलते है।
- मरणासन्न व्यक्ति के मुँह में शराब डाली जाती है।
- शव को दफनाते है।
- इनके मुखिया को'पटेल' कहते है।
- मोर का मांस खाते है।
- इनके घरों में पीछे की तरफ खिड़की अनिवार्य होती है।
- महिलाएँ चकरी नृत्य करती है। नृत्य करते समय विशेष प्रकार का पायजामा पहनते है, जिसे 'खूसनी' कहते है।

अर्थव्यवस्था –

कुछ लोग ठेला, टेम्पू चलाते है । ईश्वर का आशीर्वाद भी प्राप्त करते हैं । इसे पाती मांगना कहते है ।

कथौड़ीः-

- उदयपुर जिलें में अधिक संख्या में।
- मूल रूप से महाराष्ट्र के है।
- खैर के वृक्ष से कत्था बनाते है इसलिए कथौड़ी कहते है।
- कथौडी दूध नहीं पीते है।
- कथौड़ी शराब पीते है एवं महिलाएं भी पुरुषों के बराबर बैठकर पीती है।
- महिलाएं गहने नहीं पहनती, गोदना गुदवाती है।
- कथौड़ी महिला द्वारा पहने जाने वाली साड़ी'फड़का' कहलाती है।
- इनका मुखिया'नायक' कहलाता है।
- **प्रमुख कविता :** डूंगर देव, वाघ देव, भारी माता, कंसारी माता।
- कथौड़ी एक संकटग्रस्त जनजाति है, केवल 35-40 परिवार ही बचे है।
- इनको'मनरेगा' में विशेष लाभ दिया जाता है पूरे परिवार को 250 दिन का रोजगार दिया जाता है।
- कथौडी पुरुषों द्वारा'सावलिया नृत्य' नवरात्रा के दिनो मे किया जाता है और महिलाओ द्वारा होली पर होली नृत्य करते है।
- कथौड़ी झोंपडे को'खोलरा' कहते है।

डामोर :

- मुख्यत : उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा जिलें में।
- सर्वाधिक जनसंख्या : डूंगरपुर
- डूंगरपुर जिलें की सीमलवाड़ा पंचायत समिति' को डामरिया क्षेत्र कहते है।
- एकमात्र जनजाति जो वनाश्रित नहीं है।
- कृषि एवं पशुपालन करते है।
- डामोर अपनी उत्पति'राजपूतों' से मानते है।
- डामोर पुरुष महिलाओं के समान गहने पहनते है।
- होली के अवसर पर किया जाने वाला कार्यक्रम "चाड़िया" कहलाता है।
- मुखिया को मुखी कहते है।
- डामोर बहु विवाह करते है।
- विवाह का आधार वधु मूल्य कहते है।

अर्थव्यवस्था : मुख्य रूप से कृषि कार्यों में संलग्न । कार्यो में संलग्न । डामोर पशुधन को लक्ष्मी मानकर उनकी पूजा दीपावली के अवसर पर विशेष रूप से करते है। डामोर गायों का श्रृंगार करते है तथा गायें रमाड़ते है। डामोर जनजाति गुजरात के पंचमहल में भरने वाले झेलाबावसी' के मेले । में, विशेष रूप से भाग लेती है । डूँगरपुर जिलें में भरने वाला ग्यारस की रेवाड़ी का मेला जो भाद्रपद-शुक्ल को भरता है में भी भाग लेते है।

सांसी :

- भरतपुर जिलें में अधिक संख्या में है।
- इनकी उत्पति सांसमल से मानी जाती है।
- इनकी दो उपजातियाँ है : बीजा, माला।
- सांसी विधवा विवाह नहीं करतें हैं ।
- 'भाखर बावजी' कुलदेवता की कसम खाने के बाद ये झूठ नहीं बोलते है।
- कसम खाते समय यह एक हाथ में कुल्हाड़ी एव दूसरे हाथ में पीपल का पत्ता रखते है।
- (भाखर बावजी के मंदिर में) लड़को को शादी के बाद अपने चरित्र की परीक्षा देनी पड़ती है, जिसे'कूकड़ी' रस्म कहते है।
- सिकोदरी माता इनकी प्रमुख आराध्य देवी है।

गरासिया :

- **सिरोही:** आबू, पिण्डवाड़ा तहसील में।
- गरासिया महिलाएं सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है।
- प्रेम विवाह को अधिक तव्वजों दी जाती है।

विवाह के प्रकार : मोर बंधिया विवाह (परम्परागत)

- पहरावणा विवाह
- ताणना विवाह (पैसे देकर या छीनकर)
- मेलवो विवाह (बाल विवाह के बाद बड़ी होने पर लडको को ससुराल छोड़कर आना)।
- **खेवणो विवाह** : इसे माता विवाह भी कहते है, शादीशुदा महिला अपने प्रेमी के साथ भाग जाती है।
- सेवा विवाह (घर जंवाई)।
- गरासिये के मुखिये को सहलोत या पालवी कहते है।
- सफेद पशु एवं मोर को पवित्र मानते है।
- नक्की झील मे अस्थियों का विसर्जन करते है।
- 12वें दिन : अंतिम संस्कार।
- गरासिया राजस्थान की तीसरी बड़ी जनजाति है।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

गरासियों की जातीय पंचायत के प्रकार :

- मोटी न्यात/ ऊँचलो न्यात : उच्च श्रेणी के लोग होते हैं, जिन्हें 'बाबीर-हाइया' कहते हैं।
- नेनकी न्यात : इसमें शामिल लोगों को माडरिया कहा जाता है।
- निजली न्यात
- जब कोई गरासिया पुरुष भील महिला से शादी कर लेता है तो उसे भील गरासिया कहते है और जब कोई गरासिया महिला भील पुरुष से शादी कर लेती है तो उसे गमेती गरासिया कहते है।
- हूरे/मोगी : मृतकों की याद में बनाएँ जाने वाले स्मारक।
- हेलरू : गरासियों की सहकारी संस्था।

गरासियों के प्रमुख मेले :

- **सियावा गाँव का मेला** : गणगौर, इस मेले में प्रेम विवाह अधिक होते है।
- **कोटेश्वर मेला** : यह अम्बा जी में भरता है।
- **चेतर-विचितर मेला** : देलवाड़ा।
- **अनाज भंडार की कोठिया** : सोहरी।

अर्थव्यवस्था : पशुपालन व कृषि ।85 प्रतिशत कृषि कार्यों में संलग्न वर्षाकालीन कृषि के आलावा लकड़ी काटना, मजदूरी, ढोर चराना व शिकार करना ।

भील :

- राजस्थान की सबसे प्राचीन जनजाति ।
- भील शब्द की उत्पति 'वील' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है तीर-कमान।
- भीलों का मुख्य अस्त्र तीर कमान ही है।
- भील राजस्थान की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है।
- उदयपुर जिले में सर्वाधिक संकेन्द्रण।
- भील 'टोटम' को अपना कुलदेवता मानते है।
- पेड़-पौधों को 'टोटम' का प्रतीक माना जाता है।
- केसरिया नाथजी (ऋषभ देव) की केसर पीकर भील झूठ नहीं बोलते है।
- 'फाइरे-फाइरे' भीलों का रणघोष है।
- हाथी वेण्डो विवाह : पेड़-पौधों को साक्षी मानकर किया जाने वाला विवाह। (हरज एवं लाड़ी)
- मंगेरिया त्यौहार के अवसर पर शादी की जाती है।
- **भील बाल**-विवाह नहीं करते है।
- तलाक को 'छड़ा फाड़ना' कहा जाता है।
- यदि कोई महिला अपने पति को छोड़कर किसी दूसरे पुरुष के साथ रहती है तो उस पुरुष को पूर्व पति को झगड़ा राशि देनी पड़ती है।
- विवाह के समय दूल्हें द्वारा अपने ससुराल में भराड़ी माता का मंदिर बनाना होता है।
- भराड़ी माता को विवाह की देवी कहते है।
- भील पुरुषों द्वारा हाथीमना नृत्य किया जाता है।
- होली के दूसरे दिन गैर नृत्य किया जाता है।
- गंवरी भीलों का प्रसिद्ध लोकनाट्य है जो रक्षाबन्धन से शुरु होकर 40 दिन तक चलता है।
- हेलमो : भीलों द्वारा मिलजुल कर किया जाने वाला कार्य ।

भीलों के प्रमुख मेले :

- **छोटिया अम्बा मेला** : बाँसवाड़ा ।
- **बेणेश्वर मेला** : डुगरपुर (माघ पूर्णिमा) नवाटापुरा गांव में।
- भील स्थानान्तरित कृषि करते है। यह दो प्रकार की होती है।
- **दजिया :** मैदानी भागों में की जाने वाली कृषि।
- **चिमाता :** पहाड़ी भागों में की जाने वाली कृषि ।
- भीलो का मुखिया 'गमेती' कहलाता है।
- मेवाड़ के राजचिन्ह में भील का चित्र बना हुआ है।
- मेवाड़ के महाराणा के राजतिलक में भी भील सरदार भूमिका निभाता था।
- **पाखरिया** : किसी सैनिक के घोडे को मारने वाला।

भीलों की अर्थव्यवस्था

अब कृषि कार्यों में संलग्न 86 प्रतिशत कृषि 10 प्रतिशत मजदूरी, 4 प्रतिशत वन-शिकार व खान खोदने में संलग्न। पहाड़ी ढालों **चिमाता/वालर/झूमिंग** खेती करते हैं। मैदानी भागों में वनों को काट कर खेती दजिया करते हैं । वनों से कोपलें, फल, गोंद व शहद एकत्रित करते हैं । पशुपालन- भैंस, गाय, बैल, भेड़, बकरियाँ, मुर्गियाँ। कुछ भील लकड़हारे भी होते हैं।

महाराणा प्रताप की **यशगाथा** के निर्माण में भील आदिवासियों का योगदान अविस्मरणीय है। मेवाड़ राज्य की रक्षार्थ किए गए भीलों के त्याग एवं स्वामिभक्त के कारण ही इस राज्य के राज्य चिह्न (Emblem of mewar) में चित्तौड़ के किले में एक ओर राजपूत राजा तथा दूसरी ओर भील राजा का चित्र अंकित है।

भील शब्दावली

अटक : भीलों के गौत्र को अटक कहा जाता है।
ढेपाड़ा : भील पुरुषों द्वारा पहने जाने वाली तंग धोती।
पोत्या : भीलों के सिर पर स्थित सफेद साफा।
खोयतु : भीलों द्वारा कमर पर बांधे जाने वाली लंगोटी ।
कछाबू : भील स्त्रियों का काले व लाल रंग का घाघरा ।
पिरिया : भील दुल्हनों द्वारा विवाह के अवसर पर पहने जाने वाला पीले रंग का लहंगा ।
सिंदूरी : भील दुल्हनों द्वारा विवाह के अवसर पर पहने जाने वाली लाल रंग की साड़ी ।
टापरा : भीलों के घर ।
फइरे- फइरे : भील जांति का रंणघोष ।
भंगोरिया : इस त्यौहार पर भील युवक-युवतियाँ अपना जीवन साथी चुनते हैं ।
हथीमना : विवाह के अवसर पर भील पुरुष द्वारा जमीन पर घुटने टेककर बैठकर तलवार को घुमाते हुए नृत्य करना।
फला/पाल : भीलों के बहुत से झोंपड़ों का समूह। में व्याप्त
भराडी : राजस्थान के दक्षिणांचल (कुशलगढ़) में, भीली जीवन में व्याप्त वैवाहिक भित्ति चित्रण की प्रमुख लोक देवी 'भराडी के नाम से जानी जाती है

मारवाड़ सेवा संघ	1920	जोधपुर	जयनारायण व्यास, अध्यक्ष दुर्गाशंकर
अमर सेवा समिति	1922	चिड़ावा	मा. प्यारेलाल गुप्ता
मारवाड़ हितकारिणी सभा	1923.	जोधपुर	जयनारायण व्यास
चरखा संघ	1927	जयपुर	जमनालाल बजाज
राजपूताना देशी राज्य परिषद	1928	अजमेर	विजयसिंह पथिक, रामनारायण चौधरी
जीवन कुटीर	1929	वनस्थली	हीरालाल शास्त्री
मारवाड़ यूथ लीग	1929	जोधपुर	जयनारायण व्यास
राजस्थान हरिजन सेवा संघ	1932	अजमेर	अध्यक्ष हरविलास शारदा
खांडलाई. आश्रम	1934	डूंगरपुर	माणिक्यलाल वर्मा
नागरी प्रचारिणी सभा	1934	धौलपुर	ज्वाला प्रसाद जिज्ञासू, जौहरीलाल इन्द्र
महिला मण्डल	1935	उदयपुर	दयाशंकर श्रोत्रिय
मारवाड़ लोक परिषद	1938		रणछोड़दास गट्टानी (अध्यक्ष)
आजाद मोर्चा	1942	जयपुर	बाबा हरिश्चन्द्र

अध्याय – 9

राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन

राजस्थान में आजादी से पूर्व कई किसान एवं आदिवासी आंदोलन हुए जो उन पर किये जा रहे अत्याचारों के विरोध में हुए । राजस्थान में कई रियासतें किसानों से मनमाना कर "लाग" वसूलती थी । इनके विरोध में समय-समय पर किसान नेताओं ने राजस्थान में किसान आंदोलन किये । इसी तरह आदिवासियों के ऊपर हुए अत्याचारों के विरोध में भी कई आंदोलन हुए जिनका नेतृत्व आदिवासी नेताओं ने किया जो राजस्थान में आदिवासी आंदोलन या किसान आंदोलन के रूप में जाने गए ।

बिजौलिया किसान आंदोलन

बिजौलिया किसान आंदोलन राजस्थान से शुरू होकर पुरे देश में फैलने वाला एक संगठित किसान आंदोलन था । बिजौलिया किसान आंदोलन इतिहास का सबसे लम्बा चलने वाला अहिंसक किसान आंदोलन था, जोकि करीब 44 साल तक चला ।

बिजौलिया किसान आंदोलन (1897-1941 44 वर्षों तक)-

जिला भीलवाड़ा
बिजौलिया का प्राचीन नाम विजयावल्ली था ।
संस्थापक अशोक परमार
बिजौलिया, मेवाड़ रियासत का ठिकाना था।
कारण
1. लगान की दरें अधिक थीं ।
2. लाग-बाग कई तरह के थे।
3. बेगार प्रथा का प्रचलन था।
बिजौलिया किसानों से 84 प्रकार का लाग-बाग (टेक्स) वसुल किया जा जाता था।
बिजौलिया के किसान लोगों में धाकड़ जाति के लोग अधिक थे।
बिजौलिया किसान आंदोलन तीन चरणों में पुरा हुआ था।
1. 1897 से 1916 नेतृत्व-साधु सीताराम दास
2. 1916 से 1923 नेतृत्व- विजयसिंह पथिक
3. 1923 से 1941 नेतृत्व – माणिक्य लाल वर्मा, हरिभाऊ उपाधाय जमनालाल बजाज, रामनारायण चौधरी

प्रथम चरण (1897 से 1916 तक) से

- 1897 में बिजौलिया के किसान गंगाराम धाकड़ के मृत्युभोज के अवसर पर गिरधारीपूरा गांव से एकत्रित होते और ठिकानेदार की शिकायत मेवाड़ के महाराणा से करने का निश्चिय करते हैं। और नानजी पटेल व ठाकरी पटेल को उदयपुर भेजा जाता है जहां मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह ने कोई भी कार्यवाही नहीं की। इस समय बिजौलिया के ठिकानेदार रावकृष्ण सिंह ने 1903 में किसानों पर चंवरी कर लगाया।

- चंवरी कर एक विवाह कर था, इसकी दर 5 रुपये थी। 1906 में कृष्णसिंह मर गया और नये ठिकानेदार राव पृथ्वीसिंह बने जिन्होंने तलवार बंधाई कर (उत्तराधिकारी शुल्क किसानों पर लागु कर दिया)।
- 1915 में पृथ्वी सिंह ने साधु सीताराम दास व इसके सहयोगी फतहकरण चारण व ब्रह्मदेव को बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।

द्वितीय चरण (1916 से 1923 तक)

- 1917 में विजयसिंह पथिक ने ऊपरमाल पंचबोर्ड (ऊपरमाल पंचायत) का गठन मन्ना पटेल की अध्यक्षता में किया । बिजौलिया किसान आंदोलन को लोकप्रिय व प्रचलित करने वाले समाचार पत्र प्रताप 2. ऊपरमाल डंका थे ।
- 1919 में बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग को बिजौलिया किसान आंदोलन की जांच के लिए भेजा जाता है। इस आयोग ने लगान की दरें कम करने तथा लाग-बागों को हटाने की सिफारिश की किन्तु मेवाड़ के महाराणा ने इसकी कोई भी सिफारिश स्वीकार नहीं की।
- 1922 में राजपुताना का ए.जी.जी. रॉबर्ट हॉलेण्ड बिजौलिया आते हैं और किसानों और ठिकानेदार के मध्य समझौता करवाते हैं यह समझौता स्थाई सिद्ध नहीं हुआ।
- 1923 में विजय सिंह पथिक को गिरफ्तार कर लिया जाता है और 6 वर्ष की सजा सुना दी जाती है।

तृतीय चरण (1923 से 1941)

- 1941 में मेवाड़ के प्रधानमंत्री सर टी. विजयराघवाचार्य थे इन्होंने अपने राजस्व मंत्री डॉ. मोहन सिंह मेहता को बिजौलिया भेजा इसने ठिकानेदार व किसानों के मध्य समझौता किया लगान की दरें कम कर दी अनेक लाग-बाग हटा दिये और बेगार प्रथा को समाप्त कर दिया ।
- यह किसान आंदोलन सफलता पूर्वक समाप्त होता है ।
- इस किसान आंदोलन में दो महिलाओं रानी भीलनी व उदी मालन ने भाग लिया था ।
- किसान आंदोलन के समय माणिक्यलाल वर्मा ने पंछीड़ा गीत लिखा था ।

बेंगू (चित्तौड़गढ़) किसान आंदोलन

- बेंगू (चित्तौड़गढ़) मेवाड़ राज्य का ठिकाना था।
- बेंगू के किसानों ने अपने यहाँ लाग-बाग, बेगार और ऊँचे लगान के विरुद्ध 1921 ई. में मेनाल (भीलवाड़ा) नामक स्थान पर आंदोलन शुरू किया। इसका नेतृत्व रामनारायण चौधरी ने किया।
- 1922 में मंडावरी में किसान आंदोलन को गोलियों की बौछार से तितर-बितर किया गया। यहाँ सिपाहियों की गोलियों का शिकार खुद एक सिपाही फेज खाँ हुआ।
- किसानों के विरोध के आगे ठाकुर अनूप सिंह को झुकना पड़ा और राजस्थान सेवा संघ और अनूप सिंह के बीच समझौता हो गया।
- मेवाड़ सरकार ने इस समझौते को बोल्शेविक संधि कहकर अनूपसिंह को उदयपुर में नजरबंद कर दिया।
- 13 जुलाई, 1923 को गोविन्दपुरा में किसान सम्मेलन पर सरकार ने गोलियां चलवायी जिसमें रूपाजी व कृपाजी नामक किसान मारे गये।
- बेंगू में किसानों की शिकायतों की जाँच हेतु सरकार ने बंदोबस्त आयुक्त श्री ट्रेन्च की अध्यक्षता में आयोग का गठन किया।
- सेटलमेन्ट कमिश्नर टेन्च की दमनकारी कार्यवाही से विजयसिंह पथिक पकड़े गये तथा उन्हें 3.5 वर्ष कठोर कारावास की सजा भुगतनी पड़ी।

बूँदी का किसान आंदोलन

राजस्थान में भूमि बंदोबस्त व्यवस्था के बावजूद भी गावों में धीरे-धीरे महाजनों का वर्चस्व बढ़ने लगा ।'साद'प्रथा के अंतर्गत प्रत्येक क्षेत्र में महाजन से लगान की अदायगी का आश्वासन लिया जाने लगा । इस व्यवस्था से किसान अधिकाधिक रूप से महाजनों पर आश्रित होने लगे तथा उनके चंगुल में फंसने लगे। 19 वीं सदी के अंत में व 20 वीं सदी के शुरू में जागीरदारों द्वारा किसानों पर नए-नए कर लगाये जाने लगे और उनसे बड़ी धनराशि एकत्रित की जाने लगी। जागीरदारी व्यवस्था शोषणात्मक हो गई। किसानों से अनेक करों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के लाग-बाग लेने की प्रथा भी प्रारंभ हो गई। ये लागें दो प्रकार की थी।

1. स्थाई लाग
2. अस्थाई लाग (इन्हें कभी-कभी लिया जाता था।)

इस कारण से जागीर क्षेत्र में किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई जिसके कारण किसानों में रोष उत्पन्न हुआ तथा वे आंदोलन करने को उतारू हो गए।

- बिजौलिया, बेंगू और अन्य क्षेत्र के किसानों के समान ही बूँदी राज्य के किसानों को भी अनेक प्रकार की लागतों (लगभग 25%), बेगार एवं ऊँची दरों पर लगान की रकम देनी पड़ रही थी।
- बूँदी राज्य में वसूले जा रहे कई करों के अलावा I रुपये पर। आने की दर से स्थाई रूप से युद्धकोष के लिए धनराशि ली जाने लगी। किसानों के लिए यह अतिरिक्त भार असहनीय था । किसान राजकीय अत्याचारों से परेशान होने लगे।
- मेवाड़ राज्य के बिजौलिया में किसान आंदोलन की कहानियां पूरे राजस्थान में व्याप्त हुई । अप्रैल 1922 में बिजौलिया की सीमा से जुड़े बूँदी राज्य के'बराड़'क्षेत्र के पीड़ित किसानों ने आंदोलन प्रारम्भ कर दिया। इसीलिए इस आंदोलन को बरड़ किसान आंदोलन भी कहते हैं । किसानों को राजस्थान सेवा संघ का मार्गदर्शन प्राप्त था।
- किसानों ने राज्य की सरकार को अनियमित लाग, बेगार व भेंट आदि देना बंद कर दिया। आंदोलन का नेतृत्व'राजस्थान सेवा संघ'के कर्मठ कार्यकर्ता'नयनू राम शर्मा कर रहे थे। इनके नेतृत्व में डाबी नामक स्थान पर किसानों का एक सम्मेलन बुलाया।
- राज्य की ओर से बातचीत द्वारा किसानों की समस्याओं एवं शिकायतों को दूर करने के लिए कई प्रयास हुए, किन्तु वे विफल हो गए। तब राज्य की सरकार ने दमनात्मक नीति

अपनाना शुरू किया और निहत्थे किसानों पर निर्ममतापूर्वक लाठियां व गोलियां बरसाई गई ।

- सत्याग्रह करने वाली स्त्रियों पर घुड़सवारों द्वारा घोड़े दौड़ाकर एवं भाले चलाकर अमानवीय अत्याचार किया गया। पुलिस द्वारा किसानों पर की गई। गोलीबारी में झण्डा गीत गाते हुए 'नानकजी भील' शहीद हो गए ।
- आंदोलनकारियों के नेता नयनू राम शर्मा, नारायण लाल, भंवरलाल आदि एवं राजस्थान सेवा संघ के अनेक कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर मुकदमे चलाए गए। नयनू राम शर्मा को राजद्रोह के अपराध में 4 वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी ।
- यद्यपि यह आंदोलन असफल रहा किन्तु इस आंदोलन से यहाँ के किसानों को कुछ रियायतें अवश्य प्राप्त हुई और भ्रष्ट अधिकारियों को दण्डित किया गया तथा राज्य के प्रशासन में सुधारों का सूत्रपात हुआ।
- बूँदी का किसान आंदोलन राज्य प्रशासन के विरुद्ध था, जबकि मेवाड़ राज्य के बिजौलिया के आंदोलन में किसानों ने अधिकांशतः जागीर व्यवस्था का विरोध किया था । बूँदी के किसान आंदोलन की विशेषता यह थी कि इसमें बड़ी संख्या में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

नीमूचाणा किसान आंदोलन 1923-24

- **नीमूचाणा किसान आंदोलन** – कोटपूतली-बहरोड़ किसान आंदोलन 14 मई 1925 को गठित नीमूचाणा हत्याकाण्ड के लिए प्रसिद्ध है ।
- 31 मई 1925 को नीमूचाणा हत्याकाण्ड तरुण राजस्थान समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ ।नीमूचाणा हत्याकाण्ड को महात्मा गांधी ने दोहरी डायरशाही और जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड से भी अधिक बुरा बताया था ।
- अलवर में 80 प्रतिशत भूमि खालसा के अंतर्गत थी जबकि केवल 20 प्रतिशत भूमि जागीरदारों के नियंत्रण में थी ।
- अलवर में अधिकांश किसानों को खालसा क्षेत्रों में स्थायी भू-राजस्व के अधिकार प्राप्त थे, जिन्हें 'बिश्वेदारों' के नाम से जाना जाता था । अलवर में भू-राजस्व की सबसे गलत पद्धति इजारा पद्धति लागू थी, जिसके तहत् ऊँची बोली बोलने वाले को निश्चित भूमि निश्चित अवधि के लिए दे दी जाती थी ।
- 1876 ई. में ब्रिटिश पद्धति पर अलवर में पहला भूमि बंदोबस्त किया गया ।
- नीमूचाणा किसान आंदोलन अलवर में हुआ नीमूचाणा गांव वर्तमान में कोटपूतली-बहरोड़ जिले की बानसूर तहसील में है। 1923 ई. में अलवर के शासक जयसिंह के द्वारा किसानों पर लाग/कर लगाए जाने के कारण इस आंदोलन की शुरुआत हुई । इजारा पद्धति- ऊंची बोली बोलने वाले को निश्चित भूमि निश्चित अवधि के लिए दिया जाना इजारा पद्धति कहलाती है ।
- नीमूचाणा गाँव के किसान रघुनाथ की पुत्री सीतादेवी 14 मई, 1925 ई. को नीमूचाणा गाँव में महिलाओं का नेतृत्व करते हुए किसानों को ललकार रही थी कि- " हम किसी भी हालत में ठिकाने को अधिक लगान नहीं देंगे ।'
- 1924 ई में नीमूचाणा आंदोलन की समस्या को माधवसिंह व गोविंदसिंह ने पुकार नामक पुस्तक के माध्यम से उठाया।
- 14 मई, 1925 ई. को लगभग 800 किसान नीमूचाणा में इक्कठे हुए जिन पर अंग्रेज कमाण्डर छज्जूसिंह ने गोलियाँ चला दी, जिसमें लगभग 100 लोग शहीद हुए तथा संपूर्ण गाँव राख हो गया ।
- छज्जूसिंह को राजस्थान का 'जनरल डायर' कहा जाता है । महात्मा गाँधी ने पत्रिका 'यंग इंडिया' में नीमूचाणा काण्ड को जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड से वीभत्स कहते हुए दोहरे हत्याकाण्ड (दोहरी डायरशाही) की संज्ञा दी । इसे जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के नाम से भी जाना जाता है।
- तरुण / नवीन राजस्थान (विजयसिंह पथिक) व प्रताप (गणेश शंकर विद्यार्थी) ने नीमूचाणा घटना को प्रकाशित किया।

शेखावटी किसान आंदोलन

- शेखावाटी किसान आंदोलन के दौरान राम नारायण चौधरी ने डेल्ली हैरेल्ड (लंदन) का प्रमुखता से प्रयोग आंदोलन को प्रभावी मुद्दा बनाने में किया था।
- सरदार हरलाल सिंह जाट किसान आंदोलन शेखावाटी सीकर के ख्याति प्राप्त नेता थे ।
- 1921 ई. में शेखावाटी क्षेत्र में 'चिड़ावा सेवा समिति' के गठन के आंदोलन की शुरुआत मानी जाती है।
- शेखावाटी क्षेत्र में रामनारायण चौधरी ने किसानों में जागृति पैदा की थी ।
- इस क्षेत्र में किसान आंदोलन का श्री गणेश सीकर ठिकाने से हुआ ।
- शेखावाटी किसान आंदोलन का निर्णायक दौर 1931-32 ई. में चला तथा 1934-35 ई. में सभी ठिकानों पर गतिशील हो गया ।
- शेखावाटी किसान आंदोलन हाऊस आफ कॉमन (इंग्लैंड) में भारी बहस का मुद्दा बना इसे उठाने वाले लारेन्स थे ।
- इस किसान आंदोलन के द्वारा मंडावा ठिकाने में देवीबख्श ने नागरिक अधिकारों की घोषणा की ।
- शेखावाटी किसान आंदोलन का नेतृत्व पं. नरोत्तम लाल जोशी ने किया
- शेखावाटी में पांच प्रमुख ठिकाने बिसाऊ, डूंडलोद, मंडावा, मलसीसर व नवलगढ़ थे । इन पाँच ठिकानों को पंच माणे कहा जाता था ।

सीकर किसान आंदोलन

- 1922 ई. में सीकर के नये राजा ठाकुर कल्याण सिंह द्वारा 25 से 50 प्रतिशत तक भूमि लगान वसूल करने के साथ ही सीकर में किसानों का व्यापक आंदोलन प्रारम्भ हुआ।
- अक्टूबर 1925 ई. में अखिल भारतीय जाट महासभा का अधिवेशन अजमेर के समीप पुष्कर में आयोजित हुआ ।

रणथम्भौर दुर्ग

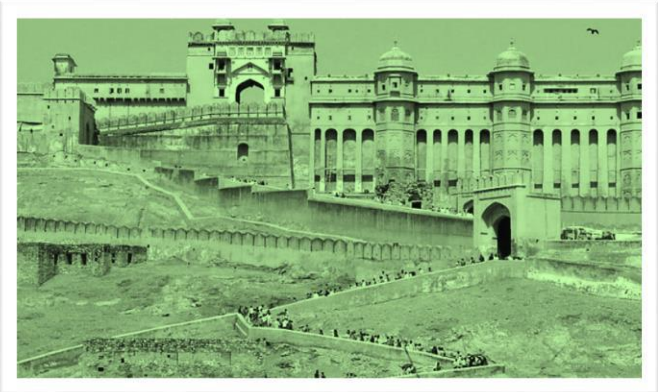

- वर्तमान में सवाई माधोपुर में स्थित है।
- इसका निर्माण 887 ई. में रणधामदेव चौहान ने करवाया। यह दुर्ग अण्डाकार आकृति में निर्मित है।
- यह रण व थंभन पहाड़ी पर स्थित होने के कारण रणथम्भौर कहलाया।
- इस दुर्ग में छह प्रवेश द्वार हैं मुख्य प्रवेश द्वार नौ लखा दरवाजा कहलाता है।
- इसे चित्तौड़गढ़ का छोटा भाई व दुर्गाधिराज भी कहते हैं।
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा बाकी सभी दुर्ग नंगे हैं यह बख्तरबंद है।
- इस दुर्ग पर दिल्ली सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी ने 1292 ई. में आक्रमण किया जब सफलता नहीं मिली तब उसने कहा कि ऐसे 10 दुर्गों को मैं मुसलमान के बाल के बराबर भी नहीं समझता।
- अलाउद्दीन खिलजी ने वर्ष 1299 ई. में असफल आक्रमण किया।
- 10 जुलाई, 1301 ई. में इस दुर्ग पर अलाउद्दीन खिलजी का अधिकार हुआ। इस आक्रमण में हम्मीर देव चौहान के नेतृत्व में केसरिया व उसकी रानी रंगदेवी के नेतृत्व में पद्मसर तालाब में जल जौहर हुआ।
- इस प्रकार यहाँ राजस्थान का प्रथम साका हुआ। इस विजय पर अमीर खुसरो का कथन " आज कुफ्र का घर इस्लाम का घर बन गया
- इस दुर्ग में हम्मीर महल, सुपारी महल, जौरा- भौरा (अनाज रखने के गोदाम), हम्मीर कचहरी, रानी कर्मावती की अधूरी छतरी(अधूरे सपनों के महल) जोगी महल, पीर सदरुद्दीन की दरगाह, रानीहाड़ तालाब, लक्ष्मीनारायण मंदिर, गुप्त गंगा स्थित है।
- दुर्ग में स्थित शिव मंदिर में हम्मीर ने अपना सिर चढ़ाया था।
- हम्मीर देव चौहान ने अपने पिता जैत्रसिंह के 32 वर्ष के शासन काल की याद में 32 खम्भों की छतरी का निर्माण करवाया जिसे न्याय की छतरी कहते हैं।
- पदमा तालाब, रणिहाल तालाब, रणत्या डूंगरी आदि स्थित हैं।
- इस दुर्ग में अर्राटा (एक उपकरण था जिससे दुश्मनों पर पत्थर फैंके जाते थे) व मगरनी (दुश्मनों पर ज्वलनशील पदार्थ फैंका जाता था) स्थित है।
- रणथम्भौर का किला हम्मीर हठ के लिए प्रसिद्ध है।
- इस किले में रणत भंवर (त्रिनेत्रगणेश जी का मंदिर शादी की पहली पत्रिका यहाँ भेजी जाती है)
- रणथम्भौर दुर्ग एक मात्र ऐसा दुर्ग है जिसमें मंदिर, मस्जिद व गिरिजाघर स्थित है।
- इसमें पीर सदरुद्दीन की दरगाह' स्थित है।

रणथम्भौर दुर्ग का सैन्य महत्त्व :-

- रणथम्भौर दुर्ग अरावली पर्वतमाला में अण्डाकार पहाड़ी पर बना होने के कारण दूर से देखने पर दिखाई नहीं देता है।
- चारों ओर जंगलों से घिरा होने के कारण अपेक्षाकृत सुरक्षित दुर्ग है। जो कि एरण दुर्ग का उदाहरण है।
- मालवा एवं दक्षिण भारत के रास्ते पर स्थित होने के कारण सामरिक दृष्टि से अत्यंत दृष्टि महत्वपूर्ण है।
- अबुल फजल के अनुसार बाकी सब किले नंगे हैं तथा यह किला बख्तरबंद (कवच) है।
- रणथम्भौर दुर्ग की सुदृढ़ प्राचीरें, अभेद बुर्जे, गुप्त प्रवेश द्वार व सुरंग तथा उन्नत सैन्य सुविधाएँ इसे सैन्य दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बनाती हैं।

मेहरानगढ़ दुर्ग

- इस दुर्ग की नींव 12 मई, 1459 ई. को रिद्धि बाई (करणी माता) ने रखी थी।
- मेहरानगढ़ किले का नाम मिहिर और गृह दो शब्दों से मिलकर बना है।
- राजाराम कड़ेला व मेहरसिंह को इस दुर्ग की नींव में जिंदा दफनाया गया था।
- इसका निर्माण राव जोधा ने करवाया था।
- यह दुर्ग पचेटिया / चिड़िया टूक पहाड़ी पर स्थित है।
- इसे मयूरध्वजगढ़, कागमुखी, गढ़ चिंतामणी, सूर्यगढ़ कहते हैं।
- इस दुर्ग के अधिकांश महलों का निर्माण अभयसिंह ने करवाया था।
- जैकेलिन कनेडी ने इसे विश्व का 8वाँ आश्चर्य कहा।
- रुडयार्ड किपलिंग ने इसका निर्माण परियों व फरिश्तों द्वारा करवाया बताया है।

- टॉड ने कहा इस दुर्ग से पूरे राज्य पर नजर रखी जा सकती है।
- मालदेव ने किले में लोहा पोळ का निर्माण करवाया था।
- अजीतसिंह ने मुगल खालसे की समाप्ति पर फतेह पोळ का निर्माण करवाया।
- मानसिंह ने किले में जयपोळ का निर्माण करवाया (इस पोळ के दरवाजे को निमाज का ठाकुर'अमरसिंह उदावत'अहमदाबाद से लाया था)।
- इस दुर्ग के लोहापोल दरवाजे पर धन्ना और भींवा (मामा भांजा) की 10 खम्भों की छतरी स्थित है। तथा जयपोल दरवाजे पर किलेदार कीरतसिंह सोढ़ा की छतरी बनी है। जसोल गाँव के कीरत सिंह सोढा, गिंगोली युद्ध के बाद जोधपुर घेरे में मानसिंह की तरफ से लड़ता हुआ मारा गया।
- इस दुर्ग में शम्बुबाण, गजनी खां, किलकिला, जमजमा, कड़क बिजली, नुसरत, गुब्बार, धुड़धणी नामक तोपे स्थित हैं।
- इस दुर्ग की तलहटी में जसवंत थड़ा है जिसे राजस्थान का ताजमहल कहते हैं। इसका निर्माण सरदारसिंह ने अपने पिता जसवंत सिंह द्वितीय की याद में करवाया।
- इस दुर्ग में झरनेश्वर महादेव, ज्वाला माता, मुरली मनोहरजी, आनन्दधन चामुण्डा माता, नागणेची माता का मंदिर स्थित है।
- यहाँ जहूर खां व भूरे खां की मजार है।
- इसमें रजिया नामक व्यक्ति को जिन्दा चुनवाया गया जहाँ वर्तमान में सिल्ह खाना स्थित है।
- इसमें मानप्रकाश पुस्तकालय, कीरतसिंह व धन्ना की छतरी स्थित है।
- मालदेव के समय शेरशाह सूरी ने इस किले पर अधिकार कर लिया था तथा एक मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- मोती महल, फूल महल, चौखेलाव महल प्रमुख महल है।
- दुर्ग में श्रृंगार चौकी है जहाँ राठौड़ों का राजतिलक होता था। श्रृंगार चौकी का निर्माण तख्त सिंह ने करवाया था।
- जोधा की'रानी जसमा दे हाड़ी ने'रानीसर तालाब'बनवाया, इससे मेहरानगढ़ किले को जलापूर्ति की जाती थी।
- इस दुर्ग को 2005 ई. में यूनेस्को अवॉर्ड दिया गया था।

जैसलमेर दुर्ग

- जैसलमेर के राजा जैसल (1155 ई.) ने इस किले का निर्माण करवाया।
- जैसलमेर के किले में सर्वाधिक 99 बुर्जे बने हुई हैं।
- जैसलमेर के किले को गोरहरागढ़, स्वर्णगिरी, द गोल्डन फोर्ट, राजस्थान का अण्डमान, रेत के समुद्र में लंगर लिये हुए जहाज के समान, रेगिस्तान का गुलाब, गलियों का दुर्ग, पश्चिमी सीमा का प्रहरी, भाटी भड किवाड, राज. का दूसरा लिविंग फोर्ट, त्रिकूटगढ़ नामों से भी जाना जाता है।
- ऐसा दुर्ग जहाँ पहुँचने के लिए पत्थर की टाँगे चाहिए।
- इस किले में प्राचीन नाली व्यवस्था है, जो वर्षा जल को आसानी से निकाल देती है, उसे'घूट नाली'कहते है।
- इस दुर्ग के बारे में एक कहावत प्रचलित है-" गढ़ दिल्ली गढ़ आगरो अधगढ़ बीकानेर, भलो चिणायो भाटियो सिरे टू जैसलमेर"
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा- घोड़ा किजे काठ का पग किजे पाषाण, अख्तर कीजे लोहे का तब पहुँचे जैसाण।
- यह दुर्ग त्रिकूट पहाड़ी पर बना हुआ है।
- इस दुर्ग में दोहरा परकोटा और आकृति घाघरेनुमा होने के कारण इसे कमरकोट कहते हैं।
- इस दुर्ग में प्रवेश अक्षयपोल से होता है।
- इस दुर्ग को स्वर्णगिरी, भाटी भड़ कीवाड़, पश्चिमी सीमा का प्रहरी, रेगिस्तान का गुलाब, गोहरगढ़, त्रिकूटगढ़, जैसाणगढ़, गलियों का दुर्ग कहते हैं।
- इस दुर्ग के निर्माण में चूने का प्रयोग नहीं हुआ है, इस दुर्ग की छत लकड़ी से बनी है जिस पर गोमूत्र से लेप किया गया है।
- वर्ष 2009 में इस दुर्ग पर ₹ 5 की डाक टिकट जारी की गई।
- जैसलमेर का किला अंगड़ाई लेते शेरे के समान, रेगिस्तान में लंगर डाले जहाज के समान प्रतीत होता है।
- जैसलमेर के किले को स्वर्णगिरि का किला कहते हैं इसे सोनार का किला भी कहते हैं।
- सत्यजीत रे ने'सोनार किला'नामक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म बनायी थी।

- **इस दुर्ग में ढाई साके हुए थे-**
- **प्रथम साका-** दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने मूलराज भाटी पर आक्रमण किया। यह साका 1312 ई. हुआ था।
- **दूसरा साका-** दिल्ली शासक फिरोज तुगलक ने 1370-71 ई. में जैसलमेर शासक राव दूदा पर आक्रमण किया।
- **तीसरा अर्द्ध साका-** इसमें कंधार के अमीर अली ने 1550 ई. में जैसलमेर शासक लूणकरण के साथ धोखा कर दुर्ग की महिलाओं को बंदी बना लिया जिससे महिलाएँ जौहर नहीं कर पायी।
- इस दुर्ग में लक्ष्मीनाथ मंदिर,बादल विलास महल, गजविलास महल, जवाहर विलास महल, हरराज महल स्थित हैं। यहाँ जैन भद्र सूरि नामक पुस्तकालय है, जो भूमिगत है।

अध्याय - 7

लोक संगीत और लोक नृत्य

संगीत से तात्पर्य गायन, वादन एवं नृत्य से है और यही तीन पक्ष इसके विकास के द्योतक हैं ।

संगीत कला को दो भागों में बांटा जाता है-

संगीत कला

- शास्त्रीय संगीत
  - हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत
    - हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल को छोडकर सम्पूर्ण भारत में प्रचलित हैं। ध्रुपद, धमर, होरी, ख्याल, टप्पा, चतुरंग, रससागर, तराना, सरगम और ठुमरी जैसी हिंदुस्तानी संगीत में गायन की दस मुख्य शैलियाँ हैं।
  - कर्नाटक शास्त्रीय संगीत
    - कर्नाटक संगीत कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल तक सीमित हैं।
- लोक गीत
  - राजस्थानी लोकगीतों में विरह गीत, श्रंगारिक गीत, महफ़िल गीत, चेतावनी गीत, फसल गीत लोकदेवताओं व देवियों से सबंधित तथा क्षेत्र विशेष के होते हैं

शास्त्रीय संगीत

- यह एक विशिष्ट गायन, वादन तथा नृत्य शैली का सूचक होता है जिसमें निश्चित नियमों का पालन किया जाता है । इसमें भारतीय एवं ईरानी संगीत का समन्वय हुआ है ।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा का संरक्षण विशिष्ट गुरु तथा शिष्य परम्परा के संयोग से बनता है, उस विशिष्ट गुरु शिष्य परम्परा को'घराना'कहा जाता है ।

राजस्थान में गायन, वादन व नृत्य के प्रमुख घराने

राजस्थान में गायन के प्रमुख घराने

घराना	प्रवर्तक	विशेषताएँ
जयपुर घराना	मनरंग (भूपत खां)	ख्याल गायन शैली का घराना है। मुहम्मद अली खां कोठी वाले इस घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए हैं।
पटियाला घराना	फ़तेह अली व अली बख्श(टोंक के नवाब इब्राहीम के दरबारी)	यह जयपुर घराने की उपशाखा है। (प्रसिद्ध पाकिस्तानी गजल गायक गुलाम अली इसी घराने के सदस्य हैं)
मेवाती घराना	उस्ताद घग्घे नजीर खां	इन्होंने जयपुर की ख्याल गायकी को ही अपनी विशिष्ट शैली में विकसित कर यह घराना प्रारम्भ किया।
डागर घराना	बहराम खां डागर	महाराजा रामसिंह के दरबारी गायक
रंगीला घराना	रमजान खां'मियाँ रंगीले	मियाँ रंगीले जोधपुर के गायक इमाम बख्श के शिष्य थे।

राजस्थान में वादन के प्रमुख घराने

घराना	प्रवर्तक	विशेषताएँ
बीनकार घराना (जयपुर)	रज्जब अली बीनकार	रज्जब अली जयपुर के महाराजा रामसिंह के दरबार में प्रसिद्ध बीनकार थे।
सेनिया घराना (जयपुर)	तानसेन के पुत्र सूरत सेन	यह सितारवादियों का घराना है। इस घराने के गायक ध्रुपद की गौहर वाणी व खण्डारवाणी में सिद्धहस्त थे।

राजस्थान में नृत्य के प्रमुख घराने		
घराना	**प्रवर्तक**	**विशेषताएँ**
जयपुर का कथक घराना	भानूजी	उत्तर भारत के प्रसिद्ध शासीय नृत्य कथक का उद्भव राजस्थान में 13 वीं सदी में माना जाता है।

राजस्थान की प्रमुख स्थानीय गायन शैलियाँ

(i) माँड गायिकी - माँड क्षेत्र (जैसलमेर) में गाई जाने वाली राग 'माँड' राग कहलाई।

राज्य की प्रसिद्ध माड गायिकाएँ- श्रीमती बन्नो बेगम (जयपुर) स्व. हाजन अल्लाह- जिलाह बाई (बीकानेर), स्व. गवरी देवी (बीकानेर), गवरी देवी (पाली), माँगीबाई (उद्यपुर), श्रीमती जमीला बानो (जोधपुर) आदि ।

(ii) मांगणियार गायिकी

माँगणियार मुस्लिम मूलतः सिंध प्रांत के हैं।

राजस्थान की पश्चिमी मरुस्थलीय सीमावर्ती क्षेत्रों बाड़मेर, जैसलमेर, फलौदी आदि में मांगणियार जाति के लोगों द्वारा अपने यजमानों के यहाँ मांगलिक अवसरों पर गायी जाती है।

मांगणियार गायिकी में मुख्यतः 6 राग एवं 36 रागनियाँ होती है ।

इनके प्रमुख वाद्य कमायचा, खड़ताल आदि है।

प्रमुख मांगणियार कलाकार-साकर खाँ मांगणियार (कमायचा वादक) साफर खाँ (ढोलक वादक), स्व. सद्दीक खाँ मांगणियार (प्रसिद्ध खड़ताल वादक)।

(iii) लंगा गायिकी- बीकानेर, बाड़मेर, फलौदी एवं जैसलमेर जिले के पश्चिमी क्षेत्रों में मांगणियारों की तरह मांगलिक अवसरों एवं उत्सवों पर लंगा जाति के गायकों द्वारा गायी जाने वाली गायन शैली 'लंगा गायिकी' कहलाती है। सारंगी व कमायचा इनके प्रमुख वाद्य है। राजपूत इनके यजमान होते है।

प्रमुख लंगा कलाकार- फूसे खाँ, महरदीन लंगा, अल्लादीन लंगा, करीम खाँ लंगा ।

(iv) तालबंदी गायिकी- राजस्थान के पूर्वी अंचल में लोक गायन की शास्त्रीय परम्परा है, जिसमें राग-रागनियों से निबद्ध प्राचीन कवियों की पदावलियाँ सामूहिक रूप से गायी जाती है, इसे ही 'तालबंदी' गायिकी कहते है ।

इसमें प्रमुख वाद्य सारंगी, हारमोनियम, ढोलक, तबला व झाँझ है एवं बीच-बीच में नगाड़ा भी बजाते है।

- **राजस्थान के प्रमुख संगीत ग्रंथ**
- **संगीत राज**
- इसकी रचना मेवाड़ के महाराणा कुम्भा द्वारा 15 वीं सदी में की गई।
- ये पाँच कोषो पाठ्य, गीत, वाद्य, नृत्य और रस रत्नकोष आदि में विभक्त है। इसे 'उल्लास' कहा गहै।
- उल्लास को पुनः परीक्षण में बांटा गया है।
- इसमें ताल, राग, वाद्य, नृत्य, रस, स्वर आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है।

राग मंजरी

- इसकी रचना पुण्डरीक विठ्ठल ने की थी।
- ये जयपुर महाराजा मानसिंह के दरबारी थे।
- प्रमुख लंगागायिकी कलाकार :- महरदीन लंगा, अल्लादीन लंगा, करीम खां लंगा, फुसे खां

राग माला

- इस ग्रंथ की रचना भी पुण्डरीक विठ्ठल ने की थी।
- इसमें राग रागिनी व शुद्ध स्वर-सप्तक का उल्लेख किया गया है।

श्रृंगार हार

- रणथम्भौर के शासक हम्मीर देव ने इस ग्रंथ की रचना की थी।
- श्रृंगार हार ग्रंथ में सर्वप्रथम मेल राग पद्धति का उल्लेख मिलता है ।

राधागोविन्द संगीत सागर

- इसकी रचना जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह के द्वारा करवाई गई ।
- इस ग्रंथ के लेखन में इनके राजकवि देवर्षि बृजपाल भट्ट का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।
- इस ग्रंथ में बिलावल को शुद्ध स्वर सप्तक कहा गया है।

राग-रत्नाकर

- जयपुर के उणीयारा ठिकाने के राव भीमसिंह के दरबार में रहकर राधा कृष्ण ने इस ग्रंथ की रचना की थी ।

राग कल्पद्रुम

- इस ग्रंथ की रचना मेंवाड़ निवासी श्री कृष्णानन्द व्यास ने की थी।
- यह ग्रंथ संगीत के साथ-साथ हिंदी साहित्य के इतिहास के निर्माण के लिये भी उपयोगी माना जाता है।

राजस्थान के प्रमुख संगीतकार

- **सवाई प्रताप सिंह**
- जयपुर नरेश सवाई प्रताप सिंह संगीत एवं चित्रकला के प्रकांड विद्वान और आश्रयदाता थे।
- इन्होंने संगीत का विशाल सम्मेलन करवाकर संगीत के प्रसिद्ध ग्रंथ राधा गोविंद संगीत सार की रचना करवाई।
- इस ग्रंथ के लेखन में इनके राजकवि देवर्षि बृजपाल भट्ट का महत्वपूर्ण योगदान रहा।
- इनके दरबार में 22 प्रसिद्ध संगीतज्ञ एवं विद्वानों की मंडली को 'गंधर्व बाईसी' कहा जाता था।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्तूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
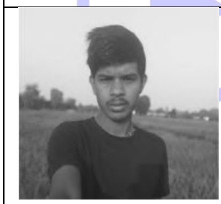	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
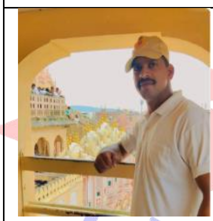	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others......

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/tiy32p

Online order करें – https://shorturl.at/coEI9

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE